झलकारी बाई — कुमारी ज्योति
जोशी

मोरोपन्त — सीताराम सिंह

दामोदर राव — कुमार शान्त [illegible]

दूल्हा सिंह
एवं गंगाधर राव } — विनोद कुमार सिंह

अंग्रेजों एवं राव साहब — श्री [illegible] सिंह

जवाहर सिंह — केशव सिंह

गोविन्द राव — अखिल कुमार

मेजर [illegible] — अशोक [illegible]

[illegible] जनरल [illegible] — अशोक [illegible]
[illegible]

[illegible] अशोक [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ।

झाँसी की रानी

— चतुर्भुज, एम॰ ए॰

झाँसी की रानी

(ऐतिहासिक नाटक)

लेखक

मधुपुंज, एम० ए०

मगध कलाकार प्रकाशन

मूल्य—ढाई रुपये

प्रकाशक :
अशोक प्रियदर्शी,
मगध कलाकार प्रकाशन,
१०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना—१ (बिहार)

प्रथम संस्करण
१९७० ई०

सर्वाधिकार लेखकाधीन

मुद्रक—
कान्त प्रेस,
पटना—१

अपनी बात

महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म एक साधारण मराठा परिवार में १९ नवम्बर, १८३४ ई० में हुआ था। उनके पिताका नाम मोरोपन्त ताम्बे और माता का नाम भागीरथी बाई थो। लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम 'मनुबाई' था। पेशवा-शासन का अन्त हो चुका था और द्वितीय बाजीराव पेशवा राज्य खोकर बिठूर में निवास कर रहे थे। मोरोपन्त, अपनी पत्नी भागीरथी बाई के देहान्त के बाद, बच्ची मनु को लेकर बिठूर आ गये। यहीं मनुबाई का शैशवकाल बीता, यहीं उनका परिचय नाना साहब और राव साहब से हुआ। इन्हीं लोगों के साथ मनुबाई ने फौजी शिक्षा पाई।

कम उम्र में ही मनुबाई की शादी झाँसी-नरेश गंगाधर राव से हुई और वे झाँसी चली गईं। झाँसी में वे रानी लक्ष्मीबाई कहलायीं और इसी नाम से प्रसिद्ध हुईं। १८५१ ई० में लक्ष्मीबाई को एक पुत्र हुआ, लेकिन तीन महीने के बाद वह रानी की गोद सूनी करके चल बसा। इससे गंगाधर राव को घोर पीड़ा हुई और २१ नवम्बर १८५३ ई० को वे चल बसे। लक्ष्मीबाई अकेली रह गईं।

मृत्यु के पूर्व गंगाधरराव ने एक लड़के को गोद ली थी। लेकिन गंगाधरराव की मृत्यु के बाद गोरी सरकार ने दत्तक पुत्र को मान्यता

नहीं दी और कुचक्र रचकर रानी को राज्य छोड़ने के लिए बाध्य किया। ब्रिटिश झंडा झाँसी के दुर्ग पर फहराने लगा। इसी बीच भारत के विभिन्न स्थानों में अंगरेजों के खिलाफ खूनी क्रान्ति हुई। झाँसी के भी भारतीय सैनिकों ने झाँसी-स्थित अंगरेज अफसरों को मार डाला। रानी ने शासन-भार फिर अपने हाथ में लिया और बड़ी योग्यता से राज-काज करने लगीं।

देश में ब्रिटिश अधिकारियों का दमनचक्र प्रारम्भ हुआ। मध्य-भारत के मालवा-क्षेत्र के उपद्रवों को दबाने का जिम्मा एक बड़े अनुभवी सेनापति जनरल सर ह्यूरोज़ को दिया गया। सर ह्यूरोज़ इस नियुक्ति के पूर्व मिस्र, सीरिया, तुर्की, क्रीमिया आदि में काफी यश अर्जित कर चुके थे। वे वृद्ध थे, भारत की जलवायु उनके अनुकूल न थी, फिर भी यह उनका ही साहस था कि मध्यभारत में उन्होंने ब्रिटिश शासन को फिर से स्थापित किया। झाँसी के दुर्ग को जीत लिया। वीरता पूर्वक लड़ती हुई रानी हार को निश्चित समझ कर किले से बाहर निकल गईं और काल्पी में फिर युद्ध किया।

काल्पी में रानी के अलावा रावसाहब और तात्या टोपे भी थे। बड़ी सेना होते हुए भी, अदूरदर्शिता के कारण, काल्पी में भी उनलोगों की हार हुई। अगला मोर्चा ग्वालियर में था। वहाँ भी हार हुई। घोड़े पर सवार, मर्दाने वेश में, रानी जा रही थीं। लेकिन रास्ते में एक नाला मिला। दुश्मन निकट आ गये। यही उनका अन्तिम युद्ध था। युद्ध करते हुए उनका अन्त हुआ—ऐसी कुछ लोगों की धारणा है।

सर ह्यूरोज़ रानी लक्ष्मीबाई के युद्ध-कौशल से बड़े प्रभावित थे। एक स्थल पर उन्होंने लिखा है-'The Ranee of Jhansi was the bravest and best military leader of the rebels.' रानी लक्ष्मीबाई इतिहास की एक ऐसी नारी हैं जिन्होंने परिस्थितियों से युद्ध किया, कुशलता और शान से शासन किया। उनके शौर्य की प्रशंसा ह्यूरोज जैसे वीर ब्रिटिश सेनानी तथा मैलेसन, 'के' और विन्सेन्ट जैसे अंगरेज इतिहासकारों ने भी की है।

ऐसे आदर्श चरित्र को रंगमंच पर लाने की इच्छा मेरे मन में कई साल पहले से थी, लेकिन रंगमंच के योग्य बनाकर लिखना कठिन काम था। इतिहास की अवहेलना न हो, चरित्र उच्च हो, स्त्री-पात्र कम हो और दृश्य प्रभावशाली हों—इन सब बातों पर काफी सोचना पड़ा। मुझे उचित लगा कि मैं उनके जीवन के उस संघर्षमय भाग को ही चित्रित करूँ जो भारतीय इतिहास की एक बड़ी घटना है और जो उनके चरित्र को उच्चतम शिखर पर ले जाता है। इसलिए नाटक का प्रारम्भ मैंने उस दृश्य से किया जहाँ यह सूचना मिलती है कि ब्रिटिश फौज झाँसी की सीमा पर पहुँच गई है तथा ह्यूरोज़ के भेजे हुए दूत मेजर स्टुअर्ट रानी के दरबार में कुछ अपमानजनक शर्तों के साथ उपस्थित होते हैं। नाटक में गोविन्द राव को छोड़कर शेष सभी चरित्र ऐतिहासिक हैं।

ऐतिहासिक नाटक लिखने के लिए काफी अध्ययन करना होता है, उस पात्र या घटना से सम्बन्धित यथासम्भव सभी उपलब्ध सामग्रियों को देखना पड़ता है जिसका समावेश नाटक या उपन्यास में आवश्यक है। मैं उन सभी मृत और जीवित लेखकों का कृतज्ञ हूँ जिनकी कृतियों से मुझे मदद मिली है। उनकी सूची भी इस पुस्तक में दी गई है।

यह नाटक इतना शीघ्र लिखा जा सका—इसका श्रेय मेरी पत्नी मनोरमा देवी और पुत्र अशोक को है। यदि वे रोज-रोज याद न दिलाते तो शायद इस नाटक को इतना शीघ्र प्रकाश में लाना सम्भव न होता। श्री अनन्त कुमार ने नाटक के मंचीकरण में बड़ी मदद की है।

कान्त प्रेस के मालिक श्री रमाकान्त सिंह और श्री श्यामाकान्त सिंह का भी कृतज्ञ हूँ जिनके प्रयास से यह पुस्तक छप सकी। साहित्य में रुचि लेने वाले श्री तारा कुमार सिन्हा ने भी अपने आशीष से मेरा उत्साह बढ़ाया है। मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

—चतुर्भुज
१७ ५-७०

सहायक पुस्तकों की सूची

१. रानी लक्ष्मीबाई : श्री निवास बालाजी हार्डीकर
२. तात्या टोपे : श्रीनिवास बालाजी हार्डीकर
३. भारत में अंगरेजी राज : सुन्दरलाल
४. संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियां : प्रकाशन शाखा, उत्तर प्रदेश सरकार
५. स्वातंत्र्य-लक्ष्मी : पं० कृष्ण रमाकान्त गोखले
६. इतिहास बोल उठा : चतुर्भुज
७. १८५७ का स्वातंत्र्य युद्ध : वि० दा० सावरकर
८. महारानी लक्ष्मीबाई : श्रीकृष्ण वर्मा 'हसरत'
९. सन् १८५७ के ग़दर का इतिहास
१०. 'अमर कहानी' का ग़दर अंक
११. झाँसी की रानी : वृन्दावन लाल वर्मा
१२. सन् ५७ के अमर सेनानी : रमाकान्त उपाध्याय
१३. Kaye's and Malleson's History of the Indian Mutiny.
१४. Eighteen Fifty seven : S. N. Sen.
१५. A Dictionary of Indian History : S. Bhattacharya.
१६. The first Indian war of Independence : Karl Marx and F. Engels.
१७. Notes on Indian History : Karl Marx.
१८. The Ranee of Jhansi : D. V. Tahmankar.

—:०:—

Scanned with OKEN Scanner

झाँसी की रानी

पात्र-परिचय और अभिनय की प्रथम रजनी के कलाकार

लक्ष्मीबाई	झाँसी की रानी	लक्ष्मी देवी
मोरोपन्त	रानी के पिता	भगवान दास
दामोदर राव	रानी के दत्तक पुत्र	कुमार शीलभद्र
जवाहर सिंह	रानी के सेनापति	हंसराज सिंह
गौस खाँ	रानी के तोपखाने के प्रधान	भगवान प्रसाद
दूल्हा सिंह	रानी के एक सरदार	विनोद कुमारसिन्हा
गोविन्द राव	एक देशभक्त नवयुवक	अशोक प्रियदर्शी
राव साहब	पेशवा के प्रतिनिधि	भगवान प्रसाद
तात्या टोपे	राव साहब के सेनापति	गंगाविष्णु
सर ह्यूरोज़	ब्रिटिश सेनापति (जनरल)	चतुर्भुज (लेखक)
मेजर स्टुअर्ट	ह्यूरोज़ के सहायक (मेजर)	रमाकान्त सिंह
दरबारी	राव साहब के मुसाहब	जगदीश प्रसाद नरेन्द्र कुमार सिंह

प्रहरी, सैनिकगण, नर्तकियाँ आदि।

सर्वप्रथम श्रीचन्द उदासीन कालेज, हिलसा, के प्रांगण में, आचार्य श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह के अनुरोध पर, 'मगध कलाकार' द्वारा, श्री चतुर्भुज (लेखक) के निर्देशन में, १९७० ई० में अभिनीत।

—:o:—

झाँसी की रानी

पहला दृश्य

स्थान—झाँसी का दरबार।

समय—दोपहर के बाद का समय।

[दरबार में जवाहर सिंह, गौस खाँ, दूल्हा सिंह, मोरोपन्त ताम्बे तथा अन्य वीरगण यथास्थान बैठे बातें कर रहे हैं। सामने एक उच्च स्थान पर गद्दे बिछे हैं तथा तकिये रखे हैं। दोनों ओर दो पहरेदार हाथ में भाले लिये खड़े हैं।]

जवाहर : मुहम्मद गौस खाँ, महारानी जी अभी तक दरबार में नहीं आईं। बात क्या है?

गौस : सिपहसालार साहब, इन दिनों महारानी जी काफी परेशानी में हैं। मुमकिन है, वो दरबार में न भी आवें।

मोरोपन्त : नहीं गौस खाँ, महारानी दरबार में अवश्य आयेंगी। आजकल दरबार में एक बार सब लोगों से मिलकर विचार-विमर्श अवश्य कर लेती हैं।

दूल्हा : जब मोरोपन्त जी कहते हैं तो बात गलत नहीं हो सकती।

गौस : कैसी बात दूल्हा सिंह जी ?

दूल्हा : मेरा मतलब था कि मोरोपन्त जी महारानी के पिता हैं। वो गलत कैसे कह सकते हैं ?

गौस : मोरोपन्त जी ठीक कहते हैं। लाख काम होने पर भी महारानी दरबार में आना नहीं भूल सकतीं। यही वो जगह है जहाँ रियाया का पूरा हाल उन्हें मिलता है और सियासी बातों पर बहस होती है।

जवाहर : गौस खाँ, महारानी ने थोड़े ही समय में झाँसी की काया बदल दी है।

दूल्हा : महाराज गंगाधर राव के स्वर्गवास किये कई साल बीत गये। झाँसी के शासन की बागडोर अंगरेजों ने अपने हाथों में ले ली थी। बेचारी रानी राजपाट छोड़ कर अलग हो गई थीं। लेकिन समय ने पल्टा खाया। झाँसी में अंगरेजी शासन का अन्त हुआ और हक रानी को वापस मिला।

गौस : वापस मिला नहीं, बल्कि उन्होंने जबर्दस्ती ले लिया। ये अंगरेज जो मरहूम महाराज गंगाधर राव के

जमाने में जमीन तक झुक कर सलाम करते थे, उनके मरते ही राज्य को हड़प बैठे। ये तो महारानी की दिलेरी थी कि झाँसी से अंगरेजी हुकूमत का सफाया हो गया।

मोरोपन्त : गौस खाँ, अंगरेजी हुकूमत का सफाया हो गया, लेकिन बुन्देलखंड की धरती पर गोरी फौज आज भी मौजूद है। वो गोरी फौज झाँसी के पास पहुँच चुकी है—ऐसी सूचना मिली है।

जवाहर : अब झाँसी सोयी नहीं रही मोरोपन्त जी। हमने ओरछा और दतिया की फौजों को पराजित किया है, सदाशिव के विद्रोह का दमन किया है। हम में अटूट शक्ति है। हम गोरों का सामना करने के लिये तैयार बैठे हैं।

गौस : ओरछा का दीवान नत्थे खाँ चालीस हजार फौज लेकर आया, लेकिन हमारी तोपों की मार ने उसके छक्के छुड़ा दिये और वो भाग खड़ा हुआ।

जवाहर : आज हमारी झाँसी आजाद है। हमारे सिपाहियों में नया जोश है। दुर्ग की दीवारों पर तोपें दुश्मन पर आग उगलने के लिए तैयार हैं।

दूल्हा : जवाहर सिंह जी, आप झाँसी के सेनाध्यक्ष हैं। आप जो भी कहेंगे, हम उसका पालन करेंगे। झाँसी का

बच्चा-बच्चा आज रणांगन में कूदने के लिए तैयार ।

प्रहरी : (नैपथ्य में) सावधान ! झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई पधार रही हैं ! सावधान !

जवाहर : महारानी आ रही हैं। अब हमलोग सावधान हो जायें ।

(रानी लक्ष्मीबाई का प्रवेश । सब लोग सम्मान में खड़े होकर अभिवादन करते हैं। रानी आसन पर बैठती हैं । अन्य लोग भी अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। रानी पुरुष वेष में हैं। पैरों में पाजामा, शरीर पर जामुनी रंग का अंगरखा, सिर पर टोपी, उस पर साफा, कमर में ज़री का दुपट्टा, उस पर लटकने वाली तलवार और कटार।)

लक्ष्मी : सेनापति जवाहर सिंह जी, हमें खबर मिली है कि अंगरेजी फौज झाँसी के पास पहुँच चुकी है। हमें क्या करना चाहिये ?

जवाहर : महारानी जी को सही खबर मिली है। झाँसी के पास गोरी फौज आ चुकी है। हमारे सैनिक पूरी तरह से तैयार हैं। इशारा पाते ही रणभूमि में कूद पड़ेंगे। सेना की टुकड़ियाँ निश्चित स्थान पर तैनात हैं।

लक्ष्मी। गौस खाँ, तुम तोपखाने के अध्यक्ष हो। गोरों के पास बड़ी-बड़ी तोपें हैं। क्या हमारी तोपें उनका मुकाबला कर सकेंगी ?

गौस : महारानी साहबा, हमने किले के अन्दर काफी बारूद और गोले तैयार कर रखे हैं। किले की चारों ओर चार बड़ी-बड़ी तोपें लगी हैं। किले की दीवारों पर कुछ मिलाकर इक्यावन तोपें हैं। इन तोपों में कड़क-बिजली, भवानीशंकर, घनगर्ज वगैरह खतरनाक तोपें भी हैं।

लक्ष्मी : दूल्हा सिंह जी, हमने कहा था कि झाँसी की आसपास की सारी जमीन वीरान कर दी जाये।

दूल्हा : इस आज्ञा का पालन किया गया है महारानी जी। झाँसी के आस-पास की सारी भूमि वीरान कर दी गई है। घास का एक तिनका भी नहीं दिखाई देता है। लेकिन खबर मिली है कि टेहरी के राजा ने गोरों को घास, लकड़ी तथा रसद भेजने का वादा किया है।

लक्ष्मी : भोपाल की बेगम ने भी गोरों को रसद भेजने का आश्वासन दिया है—खैर, कोई बात नहीं। हम उनसे बाद में समझ लेंगे। झाँसी के लिए अभी संकटमय स्थिति है। हमें हर तरह की कुर्बानी करनी होगी। आजादी की रक्षा के लिए प्राण देने होंगे।

(एक प्रहरी का प्रवेश। अभिवादन)

प्रहरी : महारानी की जय हो ! द्वार पर एक अंगरेज दूत खड़ा है।

लक्ष्मी : अंगरेज दूत ? यह सिद्ध हो गया कि अंगरेजी फौज झाँसी पहुँच चुकी है। प्रहरी, अंगरेज दूत को दरबार में हाजिर करो।

(प्रहरी अभिवादन करके जाता है)

लक्ष्मी : लगता है, अंगरेज दूत कोई समाचार लेकर आया है। आपलोग जोश में आकर उसका अपमान न करें।

(मेजर स्टूअर्ट का प्रवेश। अभिवादन)

स्टूअर्ट : हम मेजर स्टूअर्ट। कुईन आफ झाँसी को सलाम बोलटा।

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, हम अपने दरबार में आप का स्वागत करते हैं। कहिये, किस कारण से आप का आना हुआ ?

स्टूअर्ट : ब्रिटिश आर्म्ड फोर्सेज झाँसी पहुँच चुका हय। हमारा कमान्डर होटा जनरल सर ह्यूरोज। हम कुईन आफ झाँसी के पास अपना कमान्डर का लेटर लाया।

(पत्र निकाल कर रानी की ओर बढ़ाते हैं)

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, उस पत्र में क्या लिखा है ? आप ही पढ़कर सुनायें।

(मेजर स्टूअर्ट पत्र खोल कर पढ़ने लगते हैं)

स्टूअर्ट : रानी साहबा, हमारा कमान्डर जनरल सर ह्यूरोज बोलटा—गोरा फौज झाँसी पहुँच गया। रानी बागी हय। झाँसी में बहुट गोरा आफिसर, वीमेन एन्ड चिल्ड्रेन–मटलब औरट और बच्चे का मर्डर हुआ—खून हुआ। रानी सबका जिम्मेडार हय। गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग बहुट नाराज। लेकिन रानी को माफी मिलने सकटा। अगर रानी अपना डरबार के लोग के साठ जनरल सर ह्यूरोज के कैम्प में हाजिर होने सकटा टो सब काम ठीक होने सकटा।

लक्ष्मी : (सक्रोध) खामोश मेजर स्टूअर्ट ! आप झाँसी की रानी को नहीं पहचानते। आप हमारा अपमान कर रहे हैं।

जवाहर : महारानी, आदेश दीजिये, इस गोरे को इसी दरबार में टुकड़े-टुकड़े कर दूँ।

गौस : मेजर स्टूअर्ट, आपने महारानी की शान के खिलाफ अल्फाज निकाले हैं। हम आपको जिन्दा न छोड़ेंगे।

स्टूअर्ट : साइलेंस। स्टौप दिस डिसकशन। आपका बहस बेकार। हम जनरल सर ह्यूरोज का लेटर पढ़ना मांगटा। उसके बाड आप रिप्लाई डेगा। आई मीन आपका जबाब।

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, हम खत का मज़मून समझ गये। आपके

कमान्डर का हुक्म है कि हम अपने दरबारियों के साथ उनके शिविर में हाजिर हों। क्यों, है न यही बात ?

स्टूअर्ट : राईट यू आर। हमारा कमान्डर आगे बोलटा—सबको अनआर्म्ड आना होगा। नो सोर्ड—नो गन—नो पिस्टल—कोई आर्म नहीं।

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, आपके कमान्डर हमलोगों को अपने शिविर में क्यों बुलाते हैं ? उनकी मन्शा क्या है ?

स्टूअर्ट : आई डोन्ट नो। हम नहीं जानटा। हमारा कमान्डर आपसे मिलना मांगटा—ट्रिटी याने सुलह करना मांगटा। इट इज ए गुड चांस फौर यू रानी साहब।

लक्ष्मी : मेजर साहब, मैं एक हिन्दू नारी हूँ। मैं आपके शिविर में नहीं जा सकती। जहाँ तक इन दरबारियों के भेजने की बात है, उसका अर्थ भी मेरी समझ में नहीं आता। इन वीरों को बिना किसी हथियार के बुलाने का क्या रहस्य हो सकता है ?

गौस : मतलब साफ है महारानी साहबा। ये लोग धोखे से हमें अपने खेमे बुला कर कुत्ते की मौत मारना चाहते हैं।

स्टूअर्ट : नो नो, इट इज योर रौंग आइडिया। हम मांगटा पीस। सुलह। नो फाइटिंग। रानी साहबा जायेगा। गोरा फौज झाँसी छोड़ देगा। वी शैल गो बैक। इसमें कोई गड़बड़ नहीं।

गौस : मेजर स्टूअर्ट। गोरों की ईमानदारी हम शुरू से देखते आये हैं। महाराज गंगाधर राव के जमाने में गोरे अफसर बार-बार झुक कर सलाम करते थे। उनके मरने के वक्त झाँसी के एजेन्ट मेजर एलिस ने उनके बच्चे दामोदर राव को वारिस मानने का वायदा किया था। लेकिन महाराज के मरहूम होते ही मेजर एलिस का वायदा हवा में उड़ गया। गोरी सरकार झाँसी की सल्तनत की खुद वारिस बन बैठी। महारानी को किला से बाहर जाने को मजबूर किया गया।

स्टूअर्ट : नौनसेन्स। गलट बाट हय ! महाराज गंगाधर राव को कोई वारिस नई ठा। डामोडर राव उनका लड़का नई। महाराजा उसको गोड लिया। डामोडर राव वाज हिज एडौप्टेड सन। डामोडर राव का झाँसी का थ्रोन पर कोई हक नहीं होने सकटा। इसलिए झाँसी का राज ब्रिटिश राज में मिला लिया गया।

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, झाँसी का राज्य मेरे पति का था। उन्होंने मरते वक्त दामोदर राव को दत्तकपुत्र माना था। हमारे धर्म में उसकी अनुमति है। जिस वक्त उन्होंने ऐसा किया था, मेजर एलिस तथा अन्य अंगरेज अधिकारी भी उपस्थित थे। उन सब लोगों की राय से उन्होंने ऐसा किया था।

स्टूअर्ट : रानी साहबा, झाँसी में हिन्दुस्तानी पलटन बगावट किया। आप उसको मडड किया। गोरा आफिसर का

खून किया। यू हैव किल्ड इंगलिश मेन, वीमेन एन्ड चिल्ड्रेन।

लक्ष्मी : गलत बात है। जब बागी सिपाहियों ने गोरे लोगों को किले में घेर रखा था तो मैंने ही आपके लोगों के लिए कई रोजतक रोटियां भेजीथीं। अंगरेज औरतों और बच्चों को अपने महल में शरण दी थी। लेकिन यह उनका दुर्भाग्य था कि मेरे मना करने के बावजूद वे सब बागियों के सामने हाजिर हो गये। मेरे पास न तो फौज थी, न कोई हथियार। बागियों से लड़ सकना मेरे लिए मुमकिन न था। फिर भी मैंने किसी तरह बागियों को झाँसी से दूर हटाया। चूंकि यहां गोरों का नामोनिशान नहीं था, इसलिए मुझे यहाँ का शासनभार ग्रहण करना पड़ा। इस बात की सूचना मैंने जबलपुर और सागर के अंगरेज अधिकारियों के पास भेजदी। लेकिन उन लोगों ने मेरा विश्वास नहीं किया, उल्टे मेरे खिलाफ फौजी तैयारी की।

स्टूअर्ट : रानी साहबा, एक्सक्यूज मी। इसका सबूत मिल चुका हय कि आप बागी हय। आप अंगरेज का मर्डर कराया।

लक्ष्मी : यह झूठ है। मैं जानती हूँ मेजर स्टूअर्ट कि गोरी सरकार बेईमान है, इसलिए दूसरे को भी बेईमान समझती है। आज जब कि गोरी फौज झाँसी की धरती पर खड़ी होकर हमें ललकार रही है तो हम भी चुप न

रहेंगे। हमने भी जंगी तैयारी की है। अब देखना है कि गोरों की तलवारों की धार अधिक तेज है या इन वीरों की तलवारों की धार।

स्टूअर्ट : सो यू वान्ट बैटल। आप मांगटा जंग। गोरा फौज झाँसी का फोर्ट मिट्टी में मिला डेगा। वी शैल ब्लो अप योर फोर्ट। आपका ये बहादुर कुछ नहीं करने सकेगा।

मोरोपन्त : मेजर स्टूअर्ट, हिन्दुस्तानी वीर मर कर अमर होते हैं। इन बूढ़ी हड्डियों में आपकी जवान हड्डियों से अधिक शक्ति है।

स्टूअर्ट : हू आर यू ? आप कौन हय ?

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, ये मेरे पिता हैं— मोरोपन्त ताम्बे। इन्हें पहचान लीजिये।

स्टूअर्ट : ओ, आई सी। यू आर फादर आफ दि रानी आफ झाँसी। सो ओल्ड एन्ड सो ब्रेव! वन्डरफुल! मि० मोरोपन्ट, हम आप से मिलकर खुश। आप समझदार आडमी आप रानी साहिबा को समझाने सकटा।

मोरोपन्त : मेजर साहब, मनु मेरी बेटी है। लेकिन मैं भूलता नहीं हूँ कि यह झाँसी की रानी है। आपलोगों ने धोखा देकर एक बार झाँसी को ले लिया था, अब और धोखा नहीं दे सकते। आप जाइये, अपने कमान्डर को कहिये। हम सब युद्ध के लिये तैयार हैं।

स्टूअर्ट : मि० मोरोपन्त, एक बार फिर सोचना होगा।

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, स्वाधीनता के लिये हम प्राणों की बलि देंगें। फिर कहती हूँ—अपनी झाँसी मैं नहीं दूँगी—नहीं दूँगी। आप अपने सेनापति को कह दें कि हम उनके शिविर में नहीं जायेंगे।

स्टूअर्ट : रानी साहबा, थिंक वन्स मोर.......

गौस : हम जंग करेंगे मेजर स्टूअर्ट।

जवाहर : हमारी तलवार चमकने के लिए तैयार है मेजर साहब।

स्टूअर्ट : वेरी गुड। आई एप्रिशियेट योर वेलर। हम आपके लिए वेट करेगा। देन वी शैल अटैक। उसके बाद जंग—बिटर फाइटिंग। राइटो! हम चला। गुडबाई रानी साहबा।

(अभिवादन करके प्रस्थान)

लक्ष्मी : झाँसी के वीर सरदारों, आप लोगों ने स्थिति समझ ली। गोरी फौज झाँसी की छाती पर खड़ी है। युद्ध अवश्यम्भावी है। विजय या मृत्यु—यही हमारा लक्ष्य होगा। हम अंतिम दम तक युद्ध करेंगे। आप लोग अभी से युद्ध के आयोजन में लग जाइये।

गौस : महारानी, हम जंग के लिए तैयार हैं।

जवाहर : हम प्राण देंगे, पर स्वाधीनता न देंगे।

सब : झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की जय

—×—

दूसरा दृश्य

स्थान : ब्रिटिश शिविर का एक भाग।

(एक मेज और कुछ कुर्सियां। ब्रिटिश सेनापति जनरल सर ह्यूरोज बैठे एक नक्शा देख रहे हैं। मुंह में पाइप है। मेजर स्टूअर्ट का प्रवेश। स्टूअर्ट को देख कर सर ह्यूरोज खड़े हो जाते हैं। स्टूअर्ट फौजी सलामी देते हैं।)

रोज : वेल मेजर स्टूअर्ट, टुम रानी के फोर्ट से आया। रानी क्या बोलने सकटा?

स्टूअर्ट : वेरी बैड न्यूज सर।

रोज : वेरी बैड? ह्वाट्स दैट मेजर स्टूअर्ट?

स्टूअर्ट : हम रानी के डरबार में हाजिर हुआ। आपका प्रोपोजल रानी को सुनाया। हम बोला-हमारा कमान्डर जनरल सर ह्यूरोज रानी को अपना डरबार के लोग के साथ सरेन्डर करने बोलटा, अपना कैम्प में हाजिर मांगटा।

रोज : वेरी गुड। रानी क्या बोलटा?

स्टूअर्ट : रानी बोला, हिन्दुस्तानी औरट ऐसा नईं करने सकटा। हम बोला, झांसी पर अटैक करेगा। रानी बोला, हम झांसी नईं डेगा। जंग करेगा।

राज : (सोचते हुए) आई सी। ....बस .... आई सी। रानी का दरबारी–हमारा मटलब–उसका कमान्डर और मिनिस्टर से हय, वो लोग क्या मांगटा ? बैटूल और पीस ?

स्टूअर्ट : वो लोग सोर्ड दिखाने सकटा। सब जंग मांगटा। नो पीस, नो सुलह, नो शान्टि। झाँसी का फोर्ट पर कैनन-तोप-लगा हय। फोर्ट के भीटर बारूद बनटा। गाला टैयार होटा। दि रानी हैज ए फाइन बैन्ड आफ सोलजर्स। दे आर प्रिपेअर्ड टु सैक्रिफाइस लाइफ फार दि डिफेन्स आफ झाँसी। सब जान देना मांगटा।

रोज : मेजर स्टुअर्ट, हमारा पौलिसी फेल किया। गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग लेटर भेजा-रानी को जिन्दा पकड़ो। हम इसी से रानी को अपने कैम्प में लाने मांगटा। रानी और उसका सपोर्टर्स आने सकटा टो हम एक मिनट में सबको अरेस्ट करने सकटा। वी कुड हैव कैप्चर्ड झाँसी विदाउट एनी ब्लडशेड। बट सौरी ! नाउ वी हैव टु प्रिपेयर फौर दि बैटूल।

स्टूअर्ट : एक्सक्यूज मी जनरल। हम रानी का हिम्मट डेखा। शी इज यंग बट वेरी डेन्जरस। वो जंग करटा, हौर्सराइड करटा, फील्ड में फौज कमान्ड करटा। उसका आर्डर पर झाँसी का हर आदमी जान देने सकटा।

रोज : आई सी। मेजर स्टुअर्ट, रानी का डरबार कैसा होटा ? आई वन्डर, हाउ वेन इन्डिन लेडी आफ सच ए यंग एज कैन रूल। रानी कम उमर का लेकिन राज करने सकटा। कैसे ?

स्टूअर्ट : सर, दि रानी आफ झांसी हैज ए कमांडिंग पर्सनालिटी। नो बडी कैन डिसओबे हर। रानी सबको कमान्ड करटा। कोई उसका आर्डर टालने नई सकटा। हमको लगा कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी उसके साठ जस्टिस नई किया।

रोज : मेजर स्टूअर्ट, रानी अंगरेज आफिसर्स का–उसका फैमिली का–मर्डर किया। हम उसको कभी माफ नहीं करेगा।

स्टूअर्ट : नो जनरल। रानी मर्डर नई किया। ईस्ट इन्डिया कम्पनी का बागी सिपाही मर्डर किया। रानी गोरा कैदी को खाना भेजा।

रोज : आई[डोन्ट बिलीव। सर रौबर्ट हैमिल्टन, पोलिटिकल एजेन्ट आफ सेंट्रल इन्डिया, हमको बोला–रानी क्रिमिनल हय, शी इज रिसपौन्सब्ल फौर आल दि मर्डर्स। गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग भी रानी को बागी बोलटा। मेजर स्टूअर्ट, रानी हैज टु बी कैप्चर्ड। आई कान्ट स्पेयर हर। रानी हैज टु बी पनिश्ड। रानी को सजा देना होगा।

स्टूअर्ट : जनरल, हम झांसी का इम्पोर्टेन्ट लोग से भेंट किया। कोई हमारा हेल्प नई करने मांगटा।

रोज : आई ऐम सौरी मेजर स्टूअर्ट। हम झाँसी के पहले बहुत फोर्ट पर यूनियन जैक रखा। ब्रिटिश सरकार का पॉलिसी हय—डिवाइड ऐन्ड रूल। हमको झाँसी में भी ऐसा माफिक करना होगा। ईस्ट ईन्डिया कम्पनी रुपया देगा ....स्टेटस याने-याने ओहदा देगा, इज्जत देगा।

स्टूअर्ट : समूचा झाँसी में एक आडमी—ओनली वन मैन कम्पनी का फ्रेन्ड मिला।

रोज : एक आडमी ? गुड। हू इज दैट फेलो ?

स्टूअर्ट : उसका नाम कुछ टेढ़ा। ही इज मि०........

रोज : हम उस आडमी से मिलने मांगटा। ही इज आवर फ्रेन्ड।

स्टूअर्ट : वह हमारा पीछे-पीछे आया।

रोज : इज ही इन दि ब्रिटिश कैम्प ?

स्टूअर्ट : ओ यस।

रोज : नाऊ ?

स्टूअर्ट : यस सर, इव्न नाऊ। वो हमारा कैम्प में हय।

रोज : ओ माई गौड ! प्रजेन्ट हिम बिफोर मी। उसको हाजिर करो....नो डीले। जस्ट नाऊ।

(स्टूअर्ट अभिवादन करके जाते हैं)

रोज : गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के सामने हम विक्ट्री का ओथ लिया। बानपुर के राजा को डिफीट डिया, सागर का फोर्ट कैप्चर किया, गढ़कोटा का फोर्ट पर यूनियन जैक खड़ा किया, चन्डेरी का फोर्ट पर गोरा सरकार का कंट्रोल हुआ। सामने हय झाँसी का फोर्ट। (दांत पीस कर) झाँसी ! वी शैल कैप्चर झाँसी। हम झाँसी में आग लगा डेगा। हम डेखने मांगटा रानी आफ झाँसी को।

(मेजर स्टूअर्ट के साथ दूल्हा सिंह का प्रवेश)

स्टूअर्ट : ही इज आवर न्यू फ्रेन्ड आफ झाँसी, ए कमान्डर आफ दि झाँसी फोर्सेज।

रोज : वेरी ग्लैड टु मीट यू। शैक हैन्ड्स....हैन्ड्स प्लीज।

(हाथ मिलाते हैं)

रोज : आप का नाम ?

दूल्हा : मेरा नाम दूल्हा सिंह है।

रोज : ह्वाट दूल्हा ?....

दूल्हा : दूल्हा सिंह।

स्टूअर्ट : सर, डूल्हा सिंह।

रोज : वेरी डिफिकल्ट। मि० डूल्हा सिंह, आप रानी आफ झाँसी का कमान्डर होटा ?

दूल्हा : नहीं साहब, फौज के प्रधान सेनापति कमांडर ... सिंह हैं। तोपखाने के अध्यक्ष गौस खाँ हैं। इस तरह सेना की देख-रेख कई आदमियों के जिम्मे है।

रोज : सबसे बड़ा ऑफिसर कौन है?

दूल्हा : रानी खुद फौजी कवायद के वक्त रहती हैं। फौजी मामलों में वो जो भी हुक्म देती हैं, वही होता है।

रोज : ओ! रानी इज दि सुप्रीम कमाण्डर। रानी सबसे बड़ा फौजी ऑफिसर होता।

दूल्हा : बिलकुल ठीक।

रोज : मि०....... (नाम याद करना चाहते हैं)

दूल्हा : दूल्हा सिंह।

रोज : ओ! मि० दूल्हा सिंह, क्या रानी फाइट करने सकता? बन्दूक चलाने सकता?

दूल्हा : साहब, रानी के लिए ये सब मामूली काम हैं। वो जंग के हर इल्म को जानती हैं। आपको शायद पता नहीं कि उनका बचपन नाना साहब पेशवा के साथ बीता है।

रोज : (आश्चर्य) नाना साहब पेशवा? दैट विलेन हिन्दू इन्सरजेन्ट लीडर आफ दि सल्तनत! ही किल्ड इंग्लिश चिल्ड्रेन इन कानपुर। [illegible], नाना साहब एण्ड रानी आफ झाँसी आर फ्रेंड्स [illegible]। वी हैव टू बी वेरी केयरफुल।

दूल्हा : जनरल साहब, आप मुझसे क्या चाहते हैं?

रोज : मि० दूल्हा सिंह, हम आपसे मिल कर खुश। आप जानता, इंडिया में हर जगह बगावत होता, लेकिन गोरा सरकार सबको खत्म करने का फैसला किया। गोरा फौज देहली फोर्ट लिया। बहादुरशाह अरेस्टेड। उसका लड़का को शूट कर दिया गया। गोरा फौज कानपुर कैप्चर किया। नाना साहब डिफीटेड। हम झाँसी को जल्द कैप्चर करेगा। रानी और उसका सपोर्टर्स को हैंग करेगा। समझा?

दूल्हा : हम आपकी पूरी मदद करेंगे जनरल साहब। लेकिन मुझे मिलेगा क्या?

रोज : एवरीथिंग...सब कुछ। आप मदद करेगा तो हम आपको मालामाल करेगा। झाँसी का हुकूमत आपको देगा।

दूल्हा : बहुत ठीक। आप निश्चिन्त रहें। मैं किले के भीतर की सारी खबरें आपके पास भेजता रहूँगा।

रोज : थैंक यू मि० दूल्हा सिंह। हाँ, गोरा फौज फोर्ट के भीतर जाना मांगता। उसका रास्ता क्या होगा?

दूल्हा : जनरल साहब, मैं जिस दरवाजे पर रहूँगा, वहाँ आप लोगों के लिए, वक्त आने पर, खुला छोड़ दूँगा।

Scanned with OKEN Scanner

रोज : वेरी गुड ! थैंक यू मि० दूल्हा सिंह । आप ड्रिंक लेटा ? यूरोपियन वाइन बहुट अच्छा होटा । मेजर स्टूअर्ट, गिव हिम ए नाइस पेग । ही इज आवर फ्रेन्ड । वेल मि० दूल्हा सिंह, आप मेजर स्टूअर्ट के साठ जाने सकटा । गुड बाई ।

(हाथ मिलाते हैं । स्टूअर्ट और दूल्हा सिंह का प्रस्थान ।)

रोज : झाँसी ! नाउ यू आर इन माई ग्रिप । हम गोरा लोग के मर्डर का रिवेन्ज लेगा—बडला लेगा । फोर्ट को गिरा डेगा ।

(कुछ देर तक टहलते हैं । फिर नक्शा देखते हैं । टहलने लगते हैं । स्टूअर्ट का पुनः प्रवेश । साथ में नवयुवक गोविन्दराव । स्टूअर्ट के हाथ में एक कागज है ।)

रोज : मेजर स्टूअर्ट । ह्वाट्स दि मैटर ? हू इज दिस ब्याय ?

स्टूअर्ट : जनरल, ही इज एन इंडियन स्पाई । डुस्मन का जासूस । ब्रिटिश फौज के बारे में इनफारमेशन क्लेक्ट करटा । कागज में लिखटा ।

(कागज रोज के हाथ में देते हैं । रोज पढ़ने की कोशिश करते हैं ।)

रोज : इसका लैंगुयेज इंडियन होटा । ब्याय, टुम कौन हय ?

गोविन्द : मैं एक मराठा नवजवान हूँ । मेरा नाम गोविन्दराव है ।

रोज : टुम मराठा ? नाम .... नाम .... क्या बोला ?

गोविन्द : गोविन्दराव ।

रोज : गोविन्डराव, टुम हमारा कैम्प में काहे आया ? टुम किसका आडमी ?

गोविन्द : मैं झाँसी की रानी का सेवक हूँ । आपके शिविर में आप की फौजी ताकत जानने के लिए आया हूँ ।

रोज : टुमको कौन भेजा ?

गोविन्द : किसी ने नहीं ।

रोज : टुम झांसी के कुईन का नाम बोलटा । टुमको कुईन भेजा ?

गोविन्द : नहीं ।

रोज: फिर कौन भेजा ?

गोविन्द : मेरी अन्तरात्मा ने ।

रोज: ये कौन होटा ?

गोविन्द : मेरे मन ने भेजा है । रानी ने नहीं भेजा है ।

रोज: टुम पागल । मेजर स्टूअर्ट, टर्न हिम आउट फ्रौम दि इंगलिश कैम्प ।

स्टूअर्ट : सर, ही इज वेरी कनिंग—बहुट चालाक ।

गोविन्द : मैं पागल नही हूँ साहब ।

रोज: बटाओ, टुम काहे आया ? हू ब्रिंग्स यू हियर ?

गोविन्द : साहब, मैं झाँसी का रहनेवाला हूँ। इसलिए अपने को रानी का सेवक मानता हूँ। जब आप लोगों ने झाँसी पर चढ़ाई करने का निश्चय किया है, तब मेरा भी कुछ फर्ज होता है। झाँसी की आजादी बनी रहे, झाँसी की रानी की शान ऊँची रहे—इसके लिए मैंने उचित समझा कि गुप्त रूप से गोरी फौज की बातें जान जाऊँ और रानी की मदद करूँ। मेरा मतलब सिर्फ इतना ही था।

रोज : न्याय, यू आर आफ वेरी टेन्डर एज। टुमारा उमर कम। टुम गड़बड़ काम करने सकटा टो हम....हम....

गोविन्द : जनरल साहब, आप वीर हैं। सुना है, आपने सीरिया, मिस्र, रूस, क्रीमिया आदि देशों में बड़ी दिलेरी दिखलाई है। लेकिन मैं क्या आप से एक सवाल पूछ सकता हूँ?

रोज : सवाल? कैसा सवाल?

गोविन्द : क्या ब्रिटिश फौज के आप जैसे वीर सेनापति को यह शोभा देता है कि आप झाँसी की रानी को अपने गेमें में बातचीत करने के बहाने बुलाये और गिरफ्तार करें?

स्टूअर्ट : न्याय, शट अप। टुमारा उमर कम, लेकिन बाट जादा।

रोज : हम कैसे जानटा—हम वुईन को अरेस्ट करने मांगटा?

गोविन्द : आप इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि रानी किसी भी कीमत पर नहीं आयेंगी। फिर आपके इस प्रस्ताव का क्या अर्थ है?

रोज : गोरा पलटन का कमान्डर टुम से इसके बारे में बाट नहीं करना मांगटा।

गोविन्द : मैं जानता हूँ, आपके पास इसका कोई जवाब नहीं है।

रोज : गोविन्दराव, टुम हमको नहीं जानटा। टुम ईस्ट इंडिया कम्पनी का टाकट नहीं जानटा। हम ब्रिटिश लोग इन्डिया में आग लगा डेगा।

गोविन्द : साहब, आग तो हमने लगायी है। सारे हिन्दुस्तान में ब्रिटिश हुकूमत की आग धधक रही है। एक क्या, सौ ह्यूरोज भी इसे नहीं बुझा सकते।

रोज : (चीख कर) यू डैमिट! टुम बागी हय। हम टुमको शूट कर डेगा। मेजर स्टूअर्ट, टेक आउट योर पिस्टल एन्ड शूट हिम डाउन।

स्टूअर्ट : (पिस्तौल निकाल कर) गोविन्दराव, टुम रेडी हो? वी रेडी! वन-टू.......

गोविन्द : ठहरिये मेजर साहब, मैं मरने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मरने से पहले मेरा एक निवेदन है। उसे मंजूर कीजिये

स्टूअर्ट : नो-नो—यू हैव टु डाई।

गोविन्द (विनीत स्वर) जनरल साहब, आप मेरे पिता के समान हैं। मेरा एक छोटा सा निवेदन है।

रोज : माफी मांगटा?

गोविन्द : नहीं । जन्मभूमि के लिए प्राण देना—यह एक बहुत बड़ा काम है साहब । मैं माफी नहीं मांगता ।

रोज : क्या मांगटा ? वेट मेजर स्टूअर्ट ।

(स्टूअर्ट पिस्तौल नीची कर लेते हैं)

गोविन्द : मैं अपनी जननी जन्मभूमि की धूल माथे पर लगा कर मरना चाहता हूँ। बस, यही, केवल यही ।

रोज : धूल ? डस्ट ? इसमें क्या हय ?

गोविन्द : इसी धूल में मैं खेलता आया हूँ साहब । यह मेरी भारत–माता है जिसके लिए हजारों हजार लोग जान देने के लिए तैयार हैं । क्या आप अपने देश को प्यार नहीं करते ? क्या आप अपने देश के नाम को ऊँचा करने के लिए यह युद्ध नहीं कर रहे हैं ?

रोज : ब्याय, आई ऐम वेरी सौरी । टुम बहाडुर । टुमारा डेस बहाडुर । आई कान्ट किल यू । नो–नेभर । मेजर स्टूअर्ट, एक्सक्यूज मी । आई मे बी रौंग । बट आई कान्ट गो एगेंस्ट माई कानशेन्स । दिस ब्याय, आई मीन–ओ–

स्टूअर्ट : सर, एक्सक्यूज मी । वी कान्ट कैप्चर झाँसी इन दिस वे । अगर आप ऐसा करेगा टो झाँसी फोर्ट हम नहीं जीटने सकेगा ।

रोज : माई फ्रेन्ड, डोन्ट बी सिल्ली । हम इस ब्याय को नहीं मारेगा, लेकिन झाँसी को जीटेगा । डोन्ट वरी । ब्याय, टुम हमारा कैम्प से बाहर जाओ । रानी को बोलो-हम कल झाँसी पर अटैक करेगा । (गोविन्द की पीठ ठोक-कर) ब्रेभ ब्याय ! विश यू गुड लक । मेजर, कम आन ।

(रोज और स्टूअर्ट का एक ओर प्रस्थान । गोविन्द-राव का दूसरी ओर प्रस्थान ।)

×

तीसरा दृश्य

स्थान—झाँसी-दुर्ग का एक भाग।

(जंगी वेश में झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई खड़ी हैं। आसपास जवाहर सिंह, मोरोपन्त, गौस खाँ, दूल्हा सिंह तथा सैनिकगण खड़े हैं। सभी के हाथों में नंगी तलवारें हैं। दूर में रह-रह कर तोपों और बन्दूकों की आवाजें हो रही हैं।)

लक्ष्मी : झाँसी के वीरों, आज कई रोज से हम अंगरेजों से लड़ रहे हैं। उन लोगों ने दुर्ग को घेर लिया है और बार-बार इसमें घुसने की कोशिश कर रहे हैं। सारा शहर वीरान हो गया है। इस युद्ध में हमारे हजारों वीर शहीद हो चुके। फिर भी गोरों की ताकत कम नहीं हुई है। वे दिन रात युद्ध कर रहे हैं।

जवाहर : महारानी, इतने दिनों तक गोरों ने इस दुर्ग को जीतने की कोशिश की, अपने हजारों वीरों की बलि दी, लेकिन वे कामयाब न हो सके। हमारी मार ने उनकी कमर तोड़ दी है।

लक्ष्मी : हमारी तोपों ने उनकी तोपों के मुंह को कई बार बन्द किया है—यह सही है, फिर भी उनका जोश वैसा ही बना है।

गौस : महारानी, आप फिक्र न करें। जबतक आपका गुलाम हय गौस खाँ जिन्दा है, गोरे किले के भीतर घुस नहीं सकते।

लक्ष्मी : गौस खाँ, तुमने जिस बहादुरी से जंग की है, तुम्हारी तोपों ने जो कमाल दिखलाये हैं, उन पर हमें नाज है।

गौस : हुजूर, इन हड्डियों में मरहूम महाराज गंगाधर राव का नमक है। मुसलमान नमकहलाल होता है। गुलाम झाँसी की रानी के हुक्म पर जान दे सकता है, लेकिन नमक-हरामी नहीं कर सकता। इस जंग ने मेरे खून में एक नया जोश भर दिया है, एक नई जिन्दगी ला दी है।

लक्ष्मी : तुम महान् हो गौस खाँ। झाँसी मिट जा सकती है, लक्ष्मीबाई की मौत हो सकती है, लेकिन देश तुम्हारी वीरता को, तुम्हारी ईमानदारी को, हमेशा याद रखेगा।

गौस : गुलाम आपका शुक्रगुजार है महारानी।

लक्ष्मी : लेकिन हमें एक बात का गहरा दुख है गौस खाँ।

गौस : किस बात का ?

लक्ष्मी : हमारे लिखने पर रावसाहब ने तात्याटोपे के साथ बीस हजार सेना हमारी मदद के लिए भेजी। लेकिन वो फौज झाँसी पहुंच भी न पायी कि अंगरेजों ने उसपर हमला कर दिया। तात्या को पीछे हटना पड़ा।

दूल्हा : अंगरेजों की कूटनीति के कारण तात्या की हार हुई। तात्या ने हमें धोखा दिया है महारानी।

लक्ष्मी : दूल्हासिंह जी, तात्या ने हमें धोखा नहीं दिया है। उन्होंने कानपुर में दो बार अंगरेजों को पराजित किया। उनमें आँधी की ताकत है। लेकिन लगता है कि उनकी फौज में फूट थी। इसीसे उनकी हार हुई।

जवाहर : किले की दीवारों में दरारें पड़ गई हैं। हमारे सैनिक उनकी मरम्मत कर रहे हैं। - लेकिन ऐसा लगता है कि हम ज्यादा तक अंगरेजों से युद्ध नहीं कर सकेंगे

लक्ष्मी : क्या मतलब ?

जवाहर : युद्ध कई दिनों से चल रहा है। हमारी रसद कम रही है, फौजी ताकत घट रही है, बारूद के खजाने नष्ट हो गये हैं।

लक्ष्मी : (सक्रोध) तो क्या हम गोरों के सामने घुटने टेक दें ? उनकी बातें मान लें ? उनके कैदी बनें ?—नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती। महाराष्ट्र का रक्त अभी पानी नहीं हुआ है जवाहरसिंह जी।

जवाहर : महरानी, मेरा निवेदन इतना ही था कि हम स्थिति को समझ कर कुछ निर्णय लें। तात्या की हार ने गोरों के उत्साह को बढ़ा दिया, तात्या टोपे की रसद, उनके फौजी सामान गोरों को मुफ्त में मिल गये हैं। अब उनका हमला और भयंकर होगा।

लक्ष्मी : हम इसकी चिन्ता नहीं करते। — फिर भी हम पिताजी की राय जानना चाहते हैं।

मोरोपन्त : मनु, जब जंग छिड़ चुकी है तो हमें पीछे हटना शोभा नहीं देता। अंगरेजों ने बार-बार हमें धोखा दिया है, बार-बार हमें तंग किया है। कई दिनों से युद्ध हो रहा है। क्या यह नर-संहार व्यर्थ जायगा ? नहीं मनु, नहीं। यदि जीना है तो शान के साथ जीओ, अन्यथा मृत्यु को स्वीकार करो।

लक्ष्मी : पिताजी, आपने एक वीर मराठा के योग्य बातें कही हैं। हम पीछे नहीं हट सकते। अंगरेजों ने हमारी वीरता को ललकारा है ? हम उनकी ललकार का वीरोचित उत्तर देंगे।

(दूर से तोपों और बन्दूकों की आवाजें तीव्रतर होती। उनमें जनरल सर ह्यूरोज का स्वर सुनाई पड़ता है।)

रोज : (दूर से) माई कन्ट्रीमेन ! मेजर गॉल, मेजर स्टूअर्ट, कर्नल लिडले, कैप्टन रॉबिन्सन, कर्नलब्रा कमैन, लेफ्टिनेन्ट बोनस, लेफ्टिनेन्ट पॉक्स ! पुश ऑन। कैप्चर अप दि फोर्ट आफ झाँसी। कैप्चर दि क्वीन। फायर ! फायर !!

(तोपों की गड़ागड़ाहट)

लक्ष्मी : शायद यह अंगरेज सेनापति की आवाज है। अंगरेजों ने पूरे वेग से हमला किया है। अब आपलोग जाकर युद्ध करें।

सब : जो आज्ञा। जय झाँसी !

(सबका प्रस्थान। तोपों और बन्दूकों की आवाज। दूर में आग की लपट। लोग भाग रहे हैं। गोरे सैनिक उनका पीछा कर रहे हैं। शोर। सर ह्यूरोज और मेजर स्टूअर्ट का प्रवेश। दोनों के हाथों में पिस्तौल। साथ में सैनिकगण।)

रोज : मेजर स्टूअर्ट, हम कई रोज से जंग करटा। लेकिन नो विक्ट्री। आई हैव कैप्चर्ड सो मेनी फोर्ट्स। बट आई एम सौरी। झाँसी का फोर्ट बहोट टाइम लेटा।

स्टूअर्ट : हमारा सोलजर्स फोर्ट में घुसना मांगटा। लेकिन रानी का कैनन-तोप-हमारा प्रोग्रेस रोकटा। हम वाल पर चढकर फोर्ट में घुसेगा। यू डोन्ट वरी जनरल।

रोज : गवर्नर जनरल बोलटा-झाँसी जल्डी कैप्चर करो। समूचा बुन्डेलखंड लेना हय। पेशवा का आमी आगे हमारा राह रोकटा। इन्डिया का समर-गर्मी ! ओह माई गॉड हमारा सोलजर्स बहुट ट्रबल में होटा मेजर स्टूअर्ट।

स्टूअर्ट : सर, आप जानटा—हम टाटिया टोपे के आर्मी को डिफीट किया। वो भाग गया। टाटिया टोपे इज वेरी डेन्जरस ही इज कमान्डर आफ दि पेशवा। ही किल्ड हन्ड्रेड्स आफ वीमेन एन्ड चिल्ड्रेन ऐट कानपुर।

रोज : इज इट ? इज ही सो डेन्जरस ?

स्टूअर्ट : ओ यस्स। ही नोज मैजिक। जादू जानटा।

रोज : मेजर स्टूअर्ट, हम उसको फाँसी पर लटकायेगा-आई विल हैन्ग टाटिया टोपे। हम पूछटा-दूल्हा सिंह कहाँ होने सकटा ?

स्टूअर्ट : आनेवाला। डोन्ट वरी। ही इज आवर फ्रेन्ड।

रोज : यस मेजर स्टूअर्ट। (दूर में दूरबीन से देखते-देखते, अचानक रुक कर) हलो मेजर, हू इज देअर ?

(स्टूअर्ट भी दूरबीन से उधर ही देखते हैं)

स्टूअर्ट : जनरल, शी इज दि रानी आफ झाँसी-दि सुप्रीम कमान्डर आफ दि झाँसी ट्रूप्स।

रोज : रानी ? वन्डरफुल ! शी इज ए रियल सोलजर। लुक ! आई ऐम हायली इम्प्रेस्ड। इन्डियन लेडी वार करना जानटा ?

स्टूअर्ट : यस सर।

लक्ष्मी : (दूर से नेपथ्य में) झाँसी के वीरों, आगे बढ़ो। दुश्मनों को पीस दो। हिन्दुस्तान का एक-एक बच्चा आजादी का दीवाना है, इसे सिद्ध कर दो। गौस खाँ! 'कड़क बिजली' और 'घनगर्ज' तोपों की मार से दुश्मनों के छक्के छुड़ा दो।

(तोपों की आवाज। 'झाँसी की रानी जिन्दा-बाद' के नारे।)

रोज: दि क्वीन इज कमांडिंग हर ट्रूप्स।

(इसी बीच स्टूअर्ट एक सैनिक से बन्दूक लेकर दूर में रानी की ओर निशाना साधते हैं। रोज देख लेते हैं और चीख कर कहते हैं-)

रोज: मेजर स्टूअर्ट ! डोन्ट शूट दी रानी। बन्दूक नीचू करो।

स्टूअर्ट : सर ! रानी इज विदिन माई गन्स रेन्ज। लेट मी शूट हर। हम रानी को गोली मारेगा।

रोज : (सक्रोध) नो, डोन्ट शूट हर। शी इज एन इन्डियन जौन आफ आर्क। हम उसको नई मारेगा। रानी को जिन्डा अरेस्ट करेगा।

(स्टूअर्ट बन्दूक हटा लेते हैं)

स्टूअर्ट : वी हैव मिस्ड ए चान्स।

रोज: डोन्ट बी सौरी मेजर। यू विल गेट ए चान्स।

(दूल्हा सिंह का प्रवेश)

स्टूअर्ट : वेल मि० डूल्हा सिंह ! आप कोई हेल्प नई करटा। हमारा सोलजर्स मुश्किल में।

दूल्हा : साहब, रानी खुद चारों तरफ घूम रही हैं। किसी को मौका नहीं देतीं कि इधर-उधर जा सके। मैं तो खुद परेशान हूँ।

स्टूअर्ट : रानी का गोला-बारुड खटम नई होटा। उसका अटैक डेन्जरस होटा।

दूल्हा : आपलोग एक काम कीजिये। उधर देखिये, वो गौस खाँ है--रानी के तोपखाने का सिपहसालार। आप उसे खत्म कर दें। उसके मरते ही रानी का जोश खत्म हो जायेगा। जब तक गौस खाँ जिन्दा रहेगा, तब तक आपकी तोपें कुछ न कर सकेंगी।

रोज : गुड आइडिया ! हम गौस खान पर अटैक करेगा। उसको फिनिश करेगा। लेकिन हम फोर्ट में कैसे जाने सकेगा ?

दूल्हा : आप किले के दक्षिणी भाग पर हमला कीजिये। वो भाग कुछ कमजोर पड़ता है। ओरछा द्वार पर मैं खुद रहूँगा। मौका पाते ही द्वार खोल दूँगा।

रोज : वेरी फाईन ! मि० दूल्हा सिंह ! हम इस विक्ट्री के बाड आपको बहोट ऊँचा ओहडा डेगा।

स्टूअर्ट : आपका मडड कौन करटा ?

दूल्हा : मैने अपने पक्ष में बहुत से लोगों को कर लिया है। वे सब आपलोगों की मदद करेंगे।

रोज : थैंक यू मि० दूल्हासिंह। अब आप जाने सकटा।

दूल्हा : आप दक्षिणी भाग पर फौरन हमला करें। कहीं कोई देख न ले। अब मैं जाता हूँ। (प्रस्थान)

रोज: मेजर स्टूअर्ट, जल्डी करने होगा—हमारा आर्डर हय कर्नल लिडले और कैप्टन रॉबिन्सन को साउथ से अटैक करने होगा। दे शुड कौट दि वाल ऐन्ड जम्प इन्टू दि फोर्ट।

स्टूअर्ट : हमारे लिए क्या आर्डर होने सकटा ?

रोज : आप दूल्हा सिंह को जानटा। आप ऐन्ड कर्नल 'लोथ' ओरछा गेट पर पर अटैक करेगा। प्लीज गो ऐन्ड लेट औल कमान्डर्स कैरी आउट माई आर्डर्स कुईक्ली।

(स्टूअर्ट का अभिवादन करके प्रस्थान)

रोज : (दाँत पीस कर) झाँसी !— आज— आज हम झाँसी कैप्चर करेगा। हमारा ब्रिटिश फ्लैग—युनियन जैक— आज झाँसी फोर्ट पर आयेगा— आज। उसके बाड— रानी—यस—देन आई विल सी दि रानी आफ झाँसी। (प्रस्थान)

(एक ओर से रानी का प्रवेश। दूसरी ओर से जवाहर सिंह का प्रवेश।)

जवाहर : महारानी, गोरे सैनिक किले की दीवारों पर सीढ़ियां लगा रहे हैं। विनाश का भयंकर ताण्डव हो रहा है। चप्पा-चप्पा जमीन के लिए युद्ध हो रहा है। हमारे सैनिक पीछे हटने लगे हैं।

लक्ष्मी : जवाहर सिंह जी, हमें अपना कर्त्तव्य करना है। अन्तिम दम तक युद्ध करना है। जब तक हमारा एक भी सैनिक जीवित रहेगा, तब तक हम युद्ध करते रहेंगे।

जवाहर : तात्या टोपे की फौज ने हमें धोखा दिया है महारानी। हम उनके भरोसे यह युद्ध कर रहे थे।

लक्ष्मी : गलत बात है। झाँसी ने यह युद्ध अपनी ताकत के भरोसे छेड़ा था। झाँसी कभी भी पेशवा के बल पर नहीं लड़ी। यदि भविष्य में भी उनकी मदद नहीं मिली तो भी हमारी जंग जारी रहेगी।

रोज : (नेपथ्य में) फायर ! फायर ! आगे बढ़ो ! गेट इन्टू दि फोर्ट ! फायर !

(बन्दूकों और तोपों की आवाज। घायल गुलाम गौस खाँ का प्रवेश। रानी दौड़कर उनके पास जाती हैं।)

लक्ष्मी : गौस खाँ ! क्या हो गया तुम्हें ?—तुम—तुम—

गौस : (लड़खड़ाती आवाज) महारानी ! दुश्मनों ने मुझ पर तोप का गोला फेंका। मैं बुरी तरह जख्मी हो गया हूँ। शायद....

लक्ष्मी : नहीं-नहीं गौस खाँ ! तुम नहीं मर सकते। मैं तुम्हें नहीं मरने दूंगी। तुमने झाँसी के लिए अपना सब कुछ कुर्बान किया है। जवाहर सिंह जी, गौस खाँ की प्राण-रक्षा के लिए हमें कुछ उठा नहीं रखना होगा।

गौस : काफी देर हो गई महारानी। अब लगता है, मेरी जिस्म ने जवाब दे दिया। या खुदा ! मुझे एक रोज के लिए, कम से कम एक रोज के लिए, और जिन्दा रखो। आज हमारी जंग का फैसला होगा। हमने मरहूम महाराज गंगाधर राव का नमक खाया है। मैंने झाँसी की हिफाजत का जिम्मा लिया है। मेरे रहते अंगरेज किले में नहीं घुस सकते। (गिरने लगते हैं। जवाहर सिंह उन्हें संभालते हैं।)

लक्ष्मी : (आँखों में आँसू) गौस खाँ, तुम्हारी बहादुरी तवारीख के पन्नों पर रहेगी। इस मुल्क का बच्चा-बच्चा तुम्हारी याद करेगा। तुम्हारी देशभक्ति के आगे हम सब नतमस्तक हैं। जवाहर सिंह जी, गौस खाँ को किसी सुरक्षित स्थान में ले चलिये।

(जवाहर सिंह और रानी सहारा देकर गौस खाँ को ले जाते हैं। रणघोष पूर्ववत्। रानी का पुनः प्रवेश। दूसरी ओर से आवेश में गोविन्द राव का प्रवेश। हाथ में नंगी तलवार।)

गोविन्द : महारानी की जय हो !

लक्ष्मी : तुम कौन हो ?

गोविन्द : मैं झाँसी का एक सैनिक हूँ। गोलन्दाज गौस खाँ के तोपखाने में काम कर रहा हूँ। मेरा नाम गोविन्द राव है।

लक्ष्मी : क्या खबर लाये हो ?

गोविन्द : गौस खाँ के घायल होने के बाद उनकी तोपें ठण्ढी पड़ गई हैं।

लक्ष्मी : मुझे मालूम है। लेकिन अब कुछ न हो सकेगा। शायद अब झाँसी की शिकस्त होगी।

गोविन्द : नहीं रानी माँ, झाँसी की शिकस्त नहीं हो सकती। गौस खाँ की तोपों में जान है। आपका इशारा मिलते ही तोपें आग उगल पड़ेंगी।

Scanned with OKEN Scanner

लक्ष्मी : गोविन्द राव, गौस खाँ की तोपों का संचालन कौन कर सकता है ?

गोविन्द : मैं कर सकता हूँ।

लक्ष्मी : तुम ?

गोविन्द : हाँ रानी माँ, मैं। मैं गौस खाँ से बहुत कुछ सीख चुका हूँ। वे मेरे गुरू थे। आप आज्ञा दें, उनकी तोपों का संचालन मैं करूंगा—मैं।

लक्ष्मी : नहीं गोविन्द राव, तुम बच्चे हो। इस उत्तरदायित्व को तुम नहीं संभाल सकते।

गोविन्द : रानी माँ, मैं गोरों के शिविर में झाँसी के जासूस के रूप में रह चुका हूँ। उनके तोपखाने की शक्ति को जानता हूँ। मैं झाँसी का रहनेवाला। विश्वासघात कभी नहीं करूँगा। आप आदेश दें।

लक्ष्मी : गोविन्द राव, महाभारत में मैंने वीर अभिमन्यु की कहानी पढ़ी थी। लगता है, तुम अभिमन्यु बन कर मेरी मदद करना चाहते हो। लेकिन परिस्थिति प्रतिकूल है, शायद तुम कुछ नहीं कर पाओगे।

गोविन्द : मैं अपनी जान तो दे सकता हूँ। झाँसी की आजादी के लिए मैं सब कुछ कुर्बान कर सकता हूँ।

लक्ष्मी : अच्छी बात है। जाओ गोविन्द राव। तोपखाने का जिम्मा तुम्हारा रहा। तुम में दृढ़ता है, आत्मविश्वास है, देशभक्ति है। ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा। जाओ।

(गोविन्द राव रानी का पैर छूते हैं। प्रस्थान।)

लक्ष्मी : विजय की आशा क्षीण हो रही है। लगता है, अंगरेजों की विजय होगी।

(जवाहर सिंह का प्रवेश)

जवाहर : महारानी। बहुत बुरी खबर लाया हूँ।

लक्ष्मी : कैसी खबर ?

जवाहर : गौस खाँ की मृत्यु हो गई।

लक्ष्मी : (जैसे वज्रपात हुआ हो) जवाहर सिंह जी!

जवाहर : दूल्हा सिंह ने ओरछा द्वार खोल दिया है। दुश्मन नगर और किले में घुस रहे हैं।

लक्ष्मी : दूल्हा सिंह ने विश्वासघात किया है जवाहर सिंह जी।

जवाहर : महारानी, अब क्या होगा ?

लक्ष्मी : जवाहर सिंह, गौस खाँ ने झाँसी की स्वाधीनता के लिए अपनी जान दी है। उसकी लाश किले के भीतर दफन की जाये ताकि उसकी मजार पर हिन्दू और मुसलमान हमेशा श्रद्धा के फूल चढ़ा सकें।

जवाहर : जो आज्ञा।

लक्ष्मी : हमने झाँसी को बचाने के लिये सब कुछ किया, लेकिन विधाता को शायद यह सब स्वीकार न हुआ। हमारी हार निश्चित है। जब शत्रु किले में घुस चुके हैं तो अब युद्ध व्यर्थ है। युद्ध बन्द कर दिया जाये और सबको प्राणरक्षा के लिये सुरक्षित स्थान में जाने के लिए कहा जाये।

जवाहर : जो आज्ञा। (प्रस्थान)

लक्ष्मी : झाँसी की दुर्दशा मैं नहीं देख सकती। गोरे किले में घुस चुके हैं। अब क्या होगा? क्या....नहीं....नहीं— मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। झाँसी की रानी कैद नहीं हो सकती। दामोदर राव! उस मासूम बच्चे को मैं किसके भरोसे छोड़ूँ? –उसे भाग्य के भरोसे छोड़ना होगा। मैंने निश्चय कर लिया है। मैं आत्महत्या करूँगी। आत्महत्या! (पिस्तौल निकाल कर अपने मस्तक का निशाना साधती हैं) माँ! जन्मभूमि! मेरा बलिदान स्वीकार करो।

(आवेश में रक्ताक्त मोरोपन्त का प्रवेश। साथ में रानी का दत्तक पुत्र दामोदर राव।)

मोरोपन्त : मनु! मनु! तुम क्या कर रही हो?

दामोदर : माँ, तुम क्या कर रही हो?

लक्ष्मी : दामोदर, तुम आ गये बेटा? (रो पड़ती है)

दामोदर : माँ, तुम रोती हो? क्या बात है?

मोरोपन्त : मनु, तुम आत्महत्या करना चाहती हो? कर्त्तव्य के भय से तुम मरना चाहती हो?

लक्ष्मी : पिताजी, झाँसी की स्वाधीनता के लिए मैंने इतने दिनों तक यह भीषण युद्ध किया, मेरे संकेत पर हजारों लोग मर मिटे, हजारों स्त्रियाँ विधवा हो गईं, हजारों लोग घर-बार छोड़ बैठे। लेकिन फल क्या निकला? पराजय। इतनी हत्याओं का पाप लगा। अब गोरे दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे। मुझे कैद कर लेंगे। क्या मैं अपना आत्म-सम्मान उन फिरंगियों के हाथों बेच दूँ?

मोरोपन्त : मनु, आवेश में न आओ। तुमने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। परिणाम की चिन्ता करना तुम्हारा काम नहीं है। लेकिन यह शोभा नहीं देता कि झाँसी की रानी आत्महत्या करें। आत्महत्या कायरता की निशानी है। आत्महत्या पाप है।

लक्ष्मी : पिताजी, आप ही बतायें—हम क्या करें ?

दामोदर : माँ, हम युद्ध करेंगे।

लक्ष्मी : बेटा, तुम नहीं जानते-हमारी हार हो गई। इस किले पर अंगरेजों का अधिकार होने वाला है।

दामोदर : तो क्या तुम उनसे डर गई हो? मैं उनसे युद्ध करूँगा माँ।

लक्ष्मी : (आँसू पोछती हुई) बेटे ! (दामोदर रानी की ओर देखते रहते हैं)

मोरोपन्त : मनु, तुम्हारी आत्महत्या के बाद दामोदर का क्या होगा ? क्या तुमने इस प्रश्न पर विचार किया है ? क्या तुम चाहती हो कि दामोदर द्वार-द्वार भटके ?

दामोदर : नहीं, मैं माँ के साथ रहूँगा

लक्ष्मी : पिताजी, अब आप ही बतायें कि मैं क्या करूँ ?

मोरोपन्त : तुमने आजादी की जोत जलाई है। उसे जलने दो। इस आग को प्रज्वलित रखो। झाँसी न सही, कहीं और चल कर इस युद्ध को जारी रखो।

लक्ष्मी : अंगरेजों का दमन-चक्र सारे देश में चल रहा है। दिल्ली पर अंगरेजों का अधिकार हो चुका। कानपुर में नाना साहब की हार हुई। हमारी सेना समाप्त हो गई, धन-सम्पति पर अब दुश्मनों का अधिकार हो गया। ऐसी स्थिति में मैं कहाँ जाऊँ? कौन मेरी सहायता करेगा ?

मोरोपन्त : तुम अभी, इसी क्षण, किले को छोड़ कर चली जाओ। दामोदर राव तथा कुछ विश्वासी सैनिकों को साथ में ले लो।

लक्ष्मी : लेकिन जाऊँ कहाँ ?

मोरोपन्त : काल्पी—राव साहब के पास। तात्या टोपे भी वहीं हैं। राव साहब ने युद्ध की बहुत बड़ी तैयारी कर रखी है। अब काल्पी को केन्द्र बनाओ। राव साहब तुम्हारे हितचिन्तक हैं। वे अवश्य मदद करेंगे।

लक्ष्मी : राव साहब ! काल्पी ! ठीक है। आपकी राय से मैं सहमत हूँ।

मोरोपन्त : अब एक क्षण भी खोना ठीक नहीं है। अंगरेज लूटमार कर रहे हैं। वे शीघ्र तुम्हारी खोज में इधर आयेंगे। मैं घायल हो चुका हूँ। घोड़े की सवारी नहीं कर सकता। इसलिए शायद मैं तुम्हारा साथ न दे सकूँ।

लक्ष्मी : आपको छोड़ कर मैं नहीं जा सकती पिताजी।

Scanned with OKEN Scanner

मोरोपन्त : मनु, अपने भावी कर्त्तव्य की ओर ध्यान दो। तुम
झाँसी की रानी हो। मेरे मरने से देश को कुछ विशे
क्षति नहीं होगी, लेकिन भावी युद्ध के संचालन के लि
तुम्हारा जीवित रहना आवश्यक है।

(घोड़े की टापध्वनि)

गोरे निकट आ रहे हैं। तुम शीघ्र चली जाओ।

लक्ष्मी : (नेत्रों में नीर) पिताजी, बचपन में मैंने माँ की ममता
दी थी। आपने मुझे पिता के प्यार के साथ-साथ
की ममता भी दी। आज आप भी....

(रानी चरण छूती हैं। दामोदर भी चरण छू
हैं। मोरोपन्त आशीष देते हैं। रानी
दामोदर का प्रस्थान। मोरोपन्त उधर दे
रहते हैं। फिर आँसू पोछकर धीरे-धीरे प्रस्था

—×—

चौथा दृश्य

स्थान—झाँसी दुर्ग के पास ब्रिटिश शिविर।

समय—प्रभात।

(कुर्सी पर बैठे सर ह्यूरोज अपनी डायरी
लिख रहे हैं। सामने मेज है।)

रोज : (लिखने के बाद पढ़ते हुए) फिफ्थ एप्रिल एटीन
फिफ्टीएट! झाँसी कैप्चर्ड। यूनियन फ्लैग होयास्टेड
आन दि फोर्ट।

(टहलने लगते हैं। मेजर स्टूअर्ट का प्रवेश। फौजी
सैल्यूट।)

स्टूअर्ट : सर, पूरा फोर्ट पर हमारा कन्ट्रोल हुआ। हमारा
सोलजर्स गोली चलाटा। दे आर शूटिंग ऐन्ड प्लन्डरिंग
दि सिटी।

रोज : सीज फायरिंग मेजर स्टूअर्ट। हम पूछटा—रानी ऑफ
झाँसी कहाँ हव?

स्टूअर्ट : नो ट्रेस। कुछ पटा नई। एक आडमी बोला—रानी
मारा गया। बट आई डोन्ट बिलीव। शी इज ए ग्रेट
फाइटर।

रोज : मेजर स्टूअर्ट ! रानी आफ झाँसी इज दि बेस्ट मिलिटरी लीडर। शी फौट फौर सो मेनी डेज। नो बडी कुड स्टैन्ड बिफोर मी फॉर सच ए लौंग टाइम। हमारा सामने कोई कमान्डर इटना डिन जंग नईं करने सका। हम उसका टारीफ करटा।

स्टूअर्ट : यू आर राइट सर।

रोज : हम फोर्ट को लिया, लेकिन रानी को अरेस्ट नईं करने सका। वेरी सौरी। हम बोलटा-रानी निकल गया। हमार सोलजर्स उसको पकड़ने नईं सका। आवर विक्ट्री इज इनकम्प्लीट।

स्टूअर्ट : सर, रानी का फादर मि० मोरोपन्ट को हम अरेस्ट किया। मोरोपन्ट रानी के बारे में बटाने सकेगा।

रोज : मोरोपन्ट ! हम उससे मिलना मांगटा मेजर स्टूअर्ट। रानी को पकड़ना होगा। मोरोपन्ट को लाने होगा। प्लीज—

(अभिवादन करके स्टूअट जाते हैं। रोज टहलते रहते हैं। कुछ देर बाद स्टूअर्ट के साथ बन्दी मोरोपन्त का प्रवेश। साथ में सैनिकगण। मोरोपन्त के चेहरे पर के रक्त के निशान यह सिद्ध करते हैं कि वे घायल हैं।)

स्टूअर्ट : सर, ही इज मि० मोरोपन्ट टाम्बे, फादर आफ दि रानी

रोज : थैंक यू मेजर। (स्टूअर्ट का अभिवादन करके प्रस्थान)

रोज : मि०मोरोपन्ट, हमको अफसोस हय-आपको अरेस्ट किया।

मोरोपन्त : नहीं साहब, इसमें अफसोस की कोई बात नहीं है। युद्ध में एक पक्ष की हार और दूसरे पक्ष की जीत तो होती ही है। यह इत्तेफाक था कि हमलोगों की हार हुई और आपलोगों की जीत हुई।

रोज : हम जानने मांगटा-आप बागी काहे हुआ ?

मोरोपन्त : हमलोग बागी नहीं हैं साहब। हम अपनी आजादी के लिए लड़ रहे हैं, अपने हक के लिए लड़ रहे हैं। यह ठीक है कि हमलोग फतहयाब नहीं हो सके। लेकिन हमारे लिए यह कम गौरव की बात नहीं है कि हमने ब्रिटिश फौज के सर ह्यूरोज जैसे रण-विशारद सेनापति को इतने दिनों तक उलझाये रखा। यदि हमारे दल में विश्वास-घातक न होता तो शायद हम विजयी होते और आज सर ह्यूरोज हमारे सामने कैदी के रूप में लाये जाते।

रोज : आई एप्रेशियेट दि वेलर आफ दि इन्डियन्स। हम हिन्दुस्टानी बहादुरी का टारीफ करटा। लेकिन आपलोग गोरा सरकार को चैलेन्ज किया, हमारा बाट नईं माना। इस लिए हमको अटैक करना पड़ा।

मोरोपन्त : आपने सब कुछ किया, झाँसी में आग लगा दी, लूटमार मचाई, लेकिन झाँसी की रानी को आप नहीं पा सके। आगे भी नहीं पा सकेंगे।

रोज : मि० मोरोपन्त, आप बहादुर। आपका उमर जादा। हम आपको छोड़ देना मांगटा। क्या आप हमारा एक सवाल का जवाब देने सकेगा ?

मोरोपन्त : कैसा सवाल ?

रोज : रानी कहाँ छिपा हय ? हम जानने मांगटा।

मोरोपन्त : मनु झाँसी में नहीं है।

रोज : मनु कौन होने सकटा ?

मोरोपन्त : झाँसी की रानी के बचपन का नाम मनु है। मैं उसे बराबर इसी नाम से पुकारता हूँ।

रोज : उसका और क्या नाम होने सकटा ?

मोरोपन्त : लक्ष्मीबाई। झाँसी में लोग उसको इसी नाम से जानते हैं।

रोज : आई सी। हाँ, दो रानी कहाँ होने सकटा ? हम उसको देखना मांगटा।

मोरोपन्त : मनु झाँसी से दूर चली गई है। आप उसे रणभूमि में ही देख सकेंगे—अर्थात् लड़ाई के मैदान में।

रोज : क्या रानी फिर लड़ना मांगटा ?

मोरोपन्त : साहब, मनु की नसों में मराठा खून है। वह मर मिटेगी, पर घुटने नहीं टेकेगी। आप समझते हैं कि झाँसी जीतकर आपने लड़ाई समाप्त कर दी। नहीं, अभी युद्ध समाप्त नहीं हुआ है। लड़ाई का अगला मोर्चा तैयार हो चुका है।

रोज : अगला मोर्चा ? यू मीन........

मोरोपन्त : काल्पी में आपलोगों के खिलाफ एक बड़ी फौज तैयार खड़ी है। वहाँ राव साहब और तात्या टोपे भी हैं। मनु भी वहीं गई है।

रोज : यू मीन टु से—आपका मतलब—रानी काल्पी गया।

मोरोपन्त : हाँ साहब, झाँसी से कहीं अधिक तैयारी काल्पी में है। यहाँ सिर्फ झाँसी की रानी थी, वहाँ तो उसके अलावा और लोग भी हैं जो अंगरेजों के जानी दुश्मन हैं।

रोज : मि० मोरोपन्ट, हम काल्पी पर अटैक करेगा। सब दुश्मन को खटम करेगा। राव साहब, टाटिया टोपे—सबको फिनिश करेगा। पूरा बुन्देलखंड एरिया से रिबेल्स को हटाने सकेगा। क्या आप हमारा मदद करने सकेगा ?

मोरोपन्त : साहब, मेरी लड़की ने गोरी सरकार से युद्ध किया। भला मैं क्यों आपलोगों की मदद करूँ?

रोज : आप हमारा कैडी। हम आपको हैन्ग करने सकटा—फाँसी पर लटकाने सकटा। लेकिन हम प्रौमिस करटा—अगर आप हमारा हेल्प करेगा टो हम आपका हेल्प करेगा।

मोरोपन्त : साहब, इस शरीर की हड्डियाँ बूढ़ी होने पर भी हिन्दुस्तानी हैं। अगर हमें मौका मिले तो हम आपलोगों से फिर युद्ध करेंगे।

रोज : आप इस पर सोचेगा। अगर आप जिन्डा रहना चाहटा हय........

मोरोपन्त : मैं गद्दार बनकर देश को धोखा नहीं दे सकता साहब। मैं यह भी साफ-साफ कह देना चाहता हूँ कि मौत से मुझे कोई खौफ नहीं है।

रोज : मि० मोरोपन्ट! आपको हम फाँसी पर लटका डेगा।

मोरोपन्त : देश के लिए मैं सब कुछ कुर्बान कर सकता हूँ।

रोज: फाइन! सेन्ट्री, हमारा आर्डर हय—मेजर स्टूअर्ट को बोलो—मोरोपन्ट को फौरन फाँसी पर लटका दिया जाय। मोरोपन्ट गुड बी हैंगड। ले जाओ।

मोरोपन्त : साहब, फूट डाल कर आपलोग अधिक दिनों तक इस देश में नहीं रह सकते। हम वीर हैं। मरने से नहीं डरते।

रोज : (चीख कर) ले जाओ।

(सैनिकों के साथ मोरोपन्त का प्रस्थान। रोज टहलने लगते हैं।)

रोज : काल्पी! वी हैव टु अटैक काल्पी।

(मेजर स्टूअर्ट के साथ दूल्हा सिंह का प्रवेश)

रोज : मि० दूल्हा सिंह! वेरी ग्लैड टु सी यू।

दूल्हा : साहब, कम्पनी सरकार की जीत हुई। झाँसी पर आपका अधिकार हो गया।

रोज : लेकिन रानी कहाँ हय ?—हम रानी को पकड़ना मांगटा।

दूल्हा : वह तो किला छोड़ कर काल्पी की तरफ चली गई।

रोज : आप जाने काहे डिया ?

दूल्हा : मैं क्या करता हुजूर ? वह तो मर्द की पोशाक में थी। घोड़े पर सवार, तलवार चलाती, निकल गई। किसी को पता तक नहीं चला कि रानी कब गई।

रोज : आपको सब मालूम। आप हमको नई बटाया।

दूल्हा : मैंने तोपों में बारूद के बजाय बाजरे भरवाये। ओरछा फाटक खोल दिया। ये सब आपके लिए किया। मुझे वायदे के मुताबिक इनाम मिलना चाहिये।

रोज : हम आपको इनाम डेगा। आप कितना डिन रानी का सर्विस में रहा ?

दूल्हा : चार पीढ़ियों से मेरे वंश के लोग झाँसी दरबार की सेवा करते रहे।

रोज : चार पीढ़ी ? फोर जेनेरेशन्स ? हमको टाज्जुब !

दूल्हा : हमें इनाम दीजिये जनरल साहब।

रोज : मि० डूल्हा सिंह, आप इटना डिन रानी ऑफ झाँसी के साठ रहा—लेकिन रानी को ढोखा डिया। हम ट आपका नया फ्रेन्ड। आप हमको भी ढोखा डेने सकटा इसलिए हम इस खेल को खटम करने मांगटा।

दूल्हा : साहब............

रोज : शट अप यू डैमिट। मेजर स्टूअर्ट ! इस आडमी को बाहर ले जाकर गोली मार डो। यह रानी को ढोखा डिया—हमको भी ढोखा डेने सकटा। शट हिम डाउन ऐटवन्स।

दूल्हा : (आर्त स्वर) साहब ! क्षमा कीजिये। मेरी जान न लीजिये।

रोज : नो नो ! ले जाओ।

(मेजर स्टूअर्ट धक्का देकर दूल्हा सिंह को ले जाते हैं।)

—×—

पांचवां दृश्य

स्थान—काल्पी में राव साहब का शिविर।

समय—प्रभात।

(राव साहब टहल रहे हैं। एक ओर उनके सेनापति तात्या टोपे खड़े हैं।)

राव : तात्या टोपे, यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आप झाँसी की रानी को मदद करना तो दूर, खुद गोरों से हारकर वापस लौटे।

तात्या : श्रीमन्त, मैं इस हार से बहुत लज्जित हूँ। जिस तात्या टोपे ने कानपुर में गोरों के छक्के छुड़ा दिये, जिसने विदेशियों के विरुद्ध मृत्युपर्यन्त युद्ध करने की कसम खायी, उसे मुट्ठी भर गोरों ने पराजित कर दिया। यह सचमुच आश्चर्य की बात है।

राव : आपके साथ पेशवा की बीस हजार फौज थी, अट्ठाइस तोपें थीं। लेकिन ह्यूरोज ने देखते-देखते आपको पराजित कर दिया। झाँसी के पास पहुँचकर भी आप रानी लक्ष्मीबाई की मदद न कर पाये।

तात्या : श्रीमन्त, तात्या ने स्वप्न में भी इस भयानक पराजय की कल्पना न की थी।

राव : मुझे आपकी कैफियत चाहिये सेनापति।

तात्या : मेरी सेना आपके आदेश पर झाँसी की रानी की मदद के लिए गई। झाँसी के पास पहुँच कर, हमने टीलों पर आग जला कर, रानी की सेना को अपने पहुँचने का संकेत दिया। जाहिर है कि मेरे पहुँचने से ह्यूरोज की घबराहट बढ़ गई होगी। अपनी सेना की कुछ टुकड़ियों को छोड़कर वह स्वयं हमारे पड़ाव की ओर बढ़ा, और फिर उसने अचानक आक्रमण कर दिया। हमने गोरों की हिम्मत का अन्दाज न किया था। हमारी फौज की आगे की पंक्ति में भगदड़ मच गई जिसका बुरा प्रभाव सारी सेना पर पड़ा। हमें पीछे हटना पड़ा।

राव : जब आपकी फौज से ह्यूरोज का युद्ध हो रहा था, तब स्पष्ट था कि झाँसी—दुर्ग पर का शत्रु-आक्रमण कुछ शिथिल पड़ गया होगा। फिर रानी ने उन पर, उस मौके पर, क्यों नहीं आक्रमण किया?

तात्या : श्रीमन्त का कहना ठीक है। यदि रानी का, उस वक्त का, आक्रमण जोरदार होता तो शायद गोरे पस्त हो जाते। पर ऐसा हुआ नहीं।

राव : अंगरेजों की रणनीति को हम अभी तक अच्छी तरह समझ नहीं सके हैं। हमारे पास अधिक फौज है, अधिक युद्ध-सामग्री है, हम इस देश के निवासी हैं, फिर भी सफलता हमें नहीं मिलती।

तात्या : हमारी हार का एक और कारण है श्रीमन्त।

राव : वो क्या ?

तात्या : आपसी फूट। मेरे पास बीस हजार सैनिक अवश्य थे। लेकिन सबलोग मेरी राय से सहमत नहीं थे। जिनकी राय का मैंने विरोध किया वे मेरी विजय नहीं चाहते थे।

राव : तात्या टोंपे, आप पेशवा की इस विशाल सेना के अध्यक्ष हैं। हम आपकी वीरता से परिचित हैं। कालपी हमारा केन्द्र है। हमें काफी सतर्क होकर आगे का युद्ध करना है।

तात्या : श्रीमन्त को मैं विश्वास दिलाता हूँ कि तात्या टोंपे शत्रुओं के लिए काल है। गोरे मेरे नाम से प्रकम्पित होते हैं। मैंने उन्हें गाजर-मूली की तरह काटा है। तलवार छूकर कसम खाता हूँ कि श्रीमन्त के एक इशारे पर मैं प्रलय ला सकता हूँ। समय आने दीजिये।

प्रहरी : (नेपथ्य से) श्रीमन्त राव साहब से झाँसी की रानी भेंट करना चाहती हैं।

राव : (साश्चर्य) झाँसी की रानी ! आश्चर्य ! प्रहरी, उन्हें शीघ्र भेज दो।

तात्या : लगता है, झाँसी का युद्ध समाप्त हो गया। रानी मदद के लिए आई हैं।

(रानी लक्ष्मीबाई का प्रवेश)

लक्ष्मी : श्रीमन्त राव साहब के चरणों में मनु का प्रणाम स्वीकार हो।

(तात्या रानी को प्रणाम करते हैं)

राव : रानी, आप हमें लज्जित कर रही हैं। हमलोग चाह कर भी आपके लिए कुछ न कर सके।

लक्ष्मी : श्रीमन्त, झाँसी ने इतने दिनों तक युद्ध किया। लेकिन अन्त में उसकी हार हुई। दुर्ग पर शत्रुओं का अधिकार हो गया। मैं किसी प्रकार अपने कुछ सैनिकों के साथ यहाँ तक आ सकी हूँ।

राव : झाँसी की हार हमारी हार है बहन। हमने तात्या टोपे के साथ बीस हजार फौज तथा अट्ठाइस तोपें भेजी थीं, लेकिन अंगरेजों की कूटनीति के कारण हम कामयाब न हो सके।

लक्ष्मी : (तलवार निकालकर) श्रीमन्त, आपके पूर्वजों ने यह तलवार झाँसी के महाराज को दी थी। हमारे पूर्वजों ने तथा मैंने भरसक इसके मान को अक्षुण्ण रखा। लेकिन अब पेशवा की कृपा और सहायता से हम वंचित हैं। इसलिए यह तलवार अब मैं आपको—पेशवा के प्रतिनिधि को—वापस करती हूँ।

(तलवार रावसाहब के पैरों के पास रख देती हैं)

राव : रानी, पेशवा ने आपको मुँहबोली बहन कहा है। आपका लालन-पालन पेशवा के महलों में हुआ है। आपकी मर्यादा पेशवा की मर्यादा है। आपने जिस पराक्रम का परिचय दिया है, वह भारतीय इतिहास में अमर रहेगा। आपने सिद्ध कर दिया है कि नारी अबला नहीं, सबला है। महाराष्ट्र क्या, सारा देश आपकी प्रशंसा के गीत गायेगा। आपने पेशवा की तलवार को अपने शौर्य से गौरवान्वित किया है। इस तलवार को आप स्वीकार करें—यह मेरा नम्र निवेदन है।

(तलवार उठाकर देना चाहते हैं)

लक्ष्मी : (आर्त स्वर) श्रीमन्त, मैं नारी हूँ, विधवा हूँ। मेरे पास अब और कुछ नहीं है। मुझे क्षमा कीजिये।

राव : रानी, झाँसी में आप अकेली थीं। यहाँ आपके साथ मैं हूँ, तात्या टोपे हैं, पेशवा की समस्त सेना है। हमलोग मिलकर गोरों से लोहा ले सकते हैं। काल्पी को केन्द्र मान कर फिर युद्ध कर सकते हैं। यह तलवार स्वीकार कीजिये।

(तलवार देते हैं)

तात्या : महारानी, जो हो गया, उस पर शोक करना व्यर्थ है। देश में क्रान्ति की आग धधक रही है। उसकी ज्वाला को हम और प्रज्जवलित करेंगे। उस ज्वाला में ये मुट्ठी भर गोरे जल मरेंगे। हमें विश्वास है कि झाँसी की पराजय का बदला हम काल्पी में लेंगे।

राव : सेनापति ह्यूरोज को जब मालूम होगा कि रानी काल्पी पहुँच चुकी हैं, तब वो इधर बढ़ेगा, काल्पी पर आक्रमण करेगा। इसलिए तात्या टोपे, हमारी जंगी तैयारी में कमी न रहे। भावी युद्ध में भारत के दो महान वीर—झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और लोहे के बने तात्या टोपे—एक साथ गोरों से युद्ध करेंगे। रानी, आप दूर से आ रही हैं। विश्राम करें। तात्या टोपे, आप रानी के ठहरने की व्यवस्था कर दें।

तात्या : जो आज्ञा। (रानी के साथ प्रस्थान)

—×—

छठा दृश्य

स्थान—ग्वालियर का दुर्ग।

समय—दोपहर।

(राव साहब मदिरा-पान कर रहे हैं। नर्त्तकियाँ नाच रही हैं। कुछ दरबारी वाह-वाह कर रहे हैं।)

राव : नाचो, खूब नाचो।

(नाच चलता रहता है। कुछ देर के बाद नर्त्तकियों का प्रस्थान)

राव : ग्वालियर-नरेश जयाजीराव सिन्धिया हमारे डर से दुर्ग छोड़कर भाग गये। (अट्टहास) आज ग्वालियर के इस दुर्ग पर पेशवा का अधिकार है—पेशवा का। सभासदों, अब पेशवा आपलोगों के महाराज हैं।

पहला दरबारी—हम श्रीमन्त पेशवा के दास हैं। जैसा हुक्म होगा, हम वैसा ही करेंगे।

दूसरा दरबारी—हम बराबर पेशवा के पक्ष में रहे हैं श्रीमन्त।

राव : हम यह एलान करते हैं कि जो व्यक्ति जयाजीराव सिन्धिया की मदद करेगा, वह मौत के घाट उतार दिया जायेगा। आपलोग हमारे ग्वालियर आने का उद्देश्य जानते हैं। हम कोंच और काल्पी के युद्धों में गोरों से पराजित हो गये। काल्पी छोड़ कर हमें हटना पड़ा। हम ग्वालियर नरेश से मदद मांगते थे। लेकिन वे अंगरेजों का पक्ष छोड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए मुझे युद्ध करना पड़ा। ग्वालियर को मोर्चा बनाकर हम फिर युद्ध करेंगे।

पहला दरबारी—आप चिन्ता न करें। ग्वालियर की ओर गोरे आ ही नहीं सकते।

दूसरा दरबारी—अगर वे आयेंगे तो हम उन्हें देख लेंगे।

पहला दरबारी—हाँ श्रीमन्त, अच्छी तरह देख लेंगे।

राव : हम युद्ध करते-करते थक गये। ग्वालियर में उत्सव का आयोजन किया जाये।

(पीते हैं)

पहला दरबारी—जरूर किया जायेगा श्रीमन्त।

दूसरा दरबारी—युद्ध के बाद उत्सव का आयोजन तो होना ही चाहिये श्रीमन्त।

(इसी बीच तात्या टोपे का प्रवेश। राव साहब को पीते देखकर लौटना चाहते हैं। राव साहब उन्हें देख लेते हैं।)

राव : कौन ? सेनापति तात्या टोपे ?

(तात्या टोपे ठहरकर उन्हें प्रणाम करते हैं)

राव : सेनापति, आप लौट क्यों रहे थे ?

तात्या : मैंने देखा कि श्रीमन्त आमोद-प्रमोद में हैं, इस समय काम की बातें नहीं की जा सकतीं। इसलिए मैं वापस लौट रहा था।

राव : सेनापति, क्या मैं काम की बातें नहीं कर सकता ?

पहला दरबारी—जरूर कर सकते हैं।

दूसरा दरबारी—श्रीमन्त बेकार की बात तो करते ही नहीं।

तात्या : (डाँटते हुए) खामोश ! तुमलोग यहाँ से फौरन निकल जाओ

(दोनों दरबारी भागते हैं)

राव : यह कैसा व्यवहार है सेनापति ?

तात्या : यह उचित व्यवहार है श्रीमन्त।

राव : आप मेरा अपमान कर रहे हैं—पेशवा के प्रतिनिधि राव साहब का अपमान कर रहे हैं।

तात्या : श्रीमन्त अपने इस क्षुद्र सेवक को क्षमा करें। लेकिन क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपके सम्मान की रक्षा यह मदिरा करेगी या आपकी तलवार ?

राव : एक सेनापति को मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता।

तात्या : तात्या टोपे बातें करने में पटु नहीं है श्रीमन्त। मैं रणभूमि में सैन्य-संचालन करना जानता हूँ, शत्रुओं को पीस देना जानता हूँ, देश की रक्षा के लिए रक्त देना जानता हूँ। मेरा ख्याल था कि मैं महाराष्ट्र के जिन वीर पुरुष के अधीनस्थ काम कर रहा हूँ, वे भी मेरे ही विचार के हैं। लेकिन ग्वालियर आने पर पता चला कि सत्ता के दम्भ ने आपके सभी विचार बदल दिये।

राव : (सक्रोध) तात्या टोपे, मेरा आदेश है—नाना साहब पेशवा के प्रतिनिधि का आदेश है—आप, अभी, इसी क्षण, ग्वालियर की सीमा से बाहर चले जाइये।

तात्या : जाता हूँ श्रीमन्त। तात्या टोपे गरीब है। उसे धन का, पदवी का, कोई लोभ नहीं। उसने अंगरेजों से लड़ने का संकल्प लिया है। उस संकल्प का पालन वह अकेला ही करेगा। जाता हूँ।

(जाना चाहते हैं। आवेश में लक्ष्मीबाई का प्रवेश हाथ में नंगी तलवार।)

Scanned with OKEN Scanner

लक्ष्मी : ठहरिये सेनापति।

राव : कौन ? रानी लक्ष्मीबाई ?

लक्ष्मी : हाँ, लक्ष्मीबाई। राव साहब, क्षमा कीजिये, मुझे कहना पड़ा—आप सत्ता के मद में अपने अस्तित्व को भूल रहे हैं। तात्या टोपे ने बराबर आपकी प्रतिष्ठा का ध्यान रखा है और आप उस वीर पुरुष को चले जाने का आदेश देते हैं। आपको शर्म नहीं आती ?

राव : रानी, तात्या टोपे ने मेरा अपमान किया है, दरबारियों के सामने मुझे नीचा दिखाया है।

लक्ष्मी : वैसे दरबारियों पर क्या आप विश्वास करते हैं जिन लोगों ने जयाजीराव सिन्धिया से विश्वासघात किया ? वे कब से आपके अपने हो गये ?

राव : रानी !

लक्ष्मी : राव साहब, मैं काल्पी से ही आपकी गतिविधि देख रही हूँ। आप मनमानी कर रहे हैं। आपने न तो मेरी राय मानी, और न तात्या टोपे की। आपकी इसी जिद के कारण कौंच के युद्ध में हमलोगों की हार हुई, आपकी अदूरदर्शिता के कारण काल्पी का दुर्ग आपके अधिकार से निकल गया।

राव : रानी !

लक्ष्मी : राव साहब, आप यदि समझते हैं कि ग्वालियर का दुर्ग आपने जीता है तो यह आपकी भूल है। यदि तात्या टोपे न होते तो सिन्धिया की फौज को आप कभी पराजित नहीं कर पाते, ग्वालियर के दुर्ग में आपका दरबार नहीं लगता और शायद इस वक्त जंगलों में भटकना पड़ता। तात्या टोपे के एक इशारे पर पेशवा की सारी सेना ग्वालियर छोड़ कर चली जायेगी, मैं भी चली जाऊँगी और आप शत्रुओं के बीच अकेले रह जायेंगे।

राव : बहन, मैं क्षमा मांगता हूँ।

लक्ष्मी : आप यहाँ आमोद-प्रमोद में समय बर्बाद कर रहे हैं और उधर काल्पी से ह्यूरोज नई तैयारी के साथ आपके खिलाफ कूच कर चुका है।

राव : रानी, यह कैसी खबर है ?

लक्ष्मी : श्रीमन्त राव साहब मदिरा का आनन्द ले रहे हैं और गोरी फौज सिर पर सवार है। आप अपनी इस सुस्ती से कभी विजयी नहीं हो सकते। यदि आपमें क्षमता होती तो आमोद-प्रमोद को त्याग कर युद्ध की तैयारी करते। याद रखिये, ग्वालियर हमारा अन्तिम मोर्चा होगा। ग्वालियर के युद्ध का परिणाम होगा—विजय या मृत्यु।

Scanned with OKEN Scanner

राव : रानी, मुझसे भयंकर भूल हुई। अपने उच्च पद की मर्यादा को मैं भूल रहा था। आपने मुझे नींद से जगा दिया। मैं आपका चिरकृतज्ञ रहूँगा। तात्या टोपे, अपने कटु शब्दों के लिए मैं लज्जित हूँ। क्षमा मांगता हूँ।

(तात्या का हाथ पकड़ लेते हैं। तात्या की आँखों से आँसू निकल पड़ते हैं।)

तात्या : श्रीमन्त, तात्या टोपे आपका दास है। रानी ने हम दोनों को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान कराया है। यह सच है कि गोरी फौज काल्पी से हमारे विरुद्ध चल चुकी है। हमें युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिये।

(गोविन्द राव का प्रवेश। अभिवादन।)

राव : तुम कौन हो ?

गोविन्द : मेरा नाम गोविन्द राव है। मैं रानी माँ से भेंट करने आया हूँ।

लक्ष्मी : श्रीमन्त, यह नवयुवक बड़ा वीर है। मेरा और मेरे पुत्र दामोदर राव का अंगरक्षक है। कहो गोविन्द राव, क्या समाचार लाये हो ?

गोविन्द : रानी माँ, जनरल ह्यूरोज की योजना है कि ग्वालियर पर चारों ओर से आक्रमण किया जाये। चार तरफ से चार गोरी सेनायें ग्वालियर की ओर बढ़ रही हैं। अवध से जनरल नेपियर भी अपनी सेना के साथ ह्यूरोज से मिल गया है। शत्रुगण अब ग्वालियर पहुँचने ही वाले हैं।

लक्ष्मी : शाबाश गोविन्द राव ! हम इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे।

गोविन्द : रानी माँ, गोरी फौज के साथ ग्वालियर के महाराजा जयाजी राव सिन्धिया भी हैं।

राव : जयाजी राव सिन्धिया ?

गोविन्द : हाँ श्रीमन्त। गोरी सेना में अंगरेजी झण्डे के साथ-साथ महाराजा सिन्धिया का भी झण्डा है।

तात्या : यह तो चिन्ता की बात है।

राव : कैसे ?

तात्या : गोरे चालाक हैं। उनलोगों ने जानबूझ कर महाराजा को तथा उनके झण्डे को अपने साथ रखा है। ग्वालियर के सैनिक अपने महाराजा पर आक्रमण कभी नहीं कर सकते।

लक्ष्मी : तात्या टोपे का अनुमान सही है श्रीमन्त। ग्वालियर के सैनिकों पर, इस दशा में, विश्वास नहीं किया जा सकता।

तात्या : आपलोग चिन्ता न करें। हमें अपना कर्त्तव्य करना है। परिणाम की चिन्ता ईश्वर करेंगे।

राव : रानी, आप ग्वालियर के पूर्वी मोर्चे का भार ग्रहण करें।

लक्ष्मी : मुझे स्वीकार है।

राव : तात्या टोपे शेष मोर्चे की व्यवस्था करेंगे।

तात्या : आप चिन्ता न करें श्रीमन्त। मैं सैन्य शिविर में जाता हूँ।

(प्रणाम करके प्रस्थान। शेष लोग भी भिन्न-भिन्न दिशाओं में प्रस्थान करते हैं।)

—×—

सातवां दृश्य

स्थान—मैदान। पास ही एक नाला।

समय—दोपहर के बाद का समय।

(सर ह्यू रोज, मेजर स्टूअर्ट तथा उनके कुछ सैनिकगण)

रोज : मेजर स्टूअर्ट, ग्वालियर को ले लिया। हमारा जीट हुआ। लेकिन रानी कहाँ होटा ?

स्टूअर्ट : जनरल, रानी वाज उन्डेड। वह इसी टरफ आया। हम उसको जल्डी अरेस्ट करने सकेगा।

रोज : रानी ग्वालियर में भी हमारा बहुट सोलजर्स को मारा। डोनो हाठ में टलवार लेकर रानी लड़टा। वन्डरफुल ! हम ऐसा बहाडुर लेडी अपना लाइफ में नई डेखा।

स्टूअर्ट : रानी घायल हुआ। भागने नईं सकेगा। हमारा सोलजर्स जिन्डा या मरा लाने सकेगा।

रोज : नो नो मेजर स्टूअर्ट, उसको मारने नईं होगा। उसको अरेस्ट करने होगा। हम उसको डेखना मांगटा। बाट करना मांगटा। जनरल नेपियर उसका जंग डेखा। रानी का हिम्मट का टारीफ किया।

स्टुअर्ट : (कुछ दूरी पर बता कर) लुक ! कुछ लोग इधर आटा ।

रोज : लेकिन रानी नई होने सकटा । शी वाज राइडिंग ए हॉर्स । उसको घोड़ा पर सवार डेखा ।

स्टुअर्ट : वेट ! हमलोग को छिपना होगा । लेट देम कम क्लोजर ।

(सबलोगों का चुपचाप एक ओर प्रस्थान । दूसरी ओर से रानी, दामोदर राव और गोविन्द राव का प्रवेश । रानी के सिर से रक्त निकल रहा है । दशा अस्त-व्यस्त है ।)

लक्ष्मी : गोविन्द राव !

गोविन्द : आज्ञा रानी माँ !

लक्ष्मी : बेटा, मैं दामोदर के लिए चिन्तित हूँ । तुम जानते हो कि ग्वालियर के मोर्चे पर भी दुश्मन ही विजयी हुए । मैं बहुत घायल हो चुकी हूँ । बच नहीं सकती । ऐसी दशा में दामोदर राव का क्या होगा ?

दामोदर मैं तुम्हारे साथ रहूँगा माँ ।

लक्ष्मी : (आर्त्त वाणी में) नहीं बेटे, माँ अब तुमसे हमेशा के लिए विदा लेने वाली है । मैंने चाहा था कि तुम झाँसी के महाराज बनो, पर विधाता को यह स्वीकार न था । गोविन्द राव, तुम क्या सोच रहे हो ?

गोविन्द : रानी माँ, राजकुमार दामोदर राव की प्राणरक्षा का भार मैं लेता हूँ । मेरे जीते-जी इनका बाल भी बाँका नहीं होगा । इनके लिए मैं अपने प्राण तक दे सकता हूँ ।

लक्ष्मी : शाबाश गोविन्द राव ! तुमने झाँसी की बड़ी सेवा की है, इस दुर्दिन में भी तुमने मेरा साथ दिया और मेरे एक बड़े उत्तरदायित्व को अपने ऊपर ले लिया । अब तुम लोग यहाँ से चले जाओ ।

गोविन्द : नहीं रानी माँ, आपको इस दशा में छोड़कर मैं नहीं जा सकता ।

लक्ष्मी : बेटे, भावुक न बनो । मेरी चिन्ता छोड़ दो । शीघ्र यहाँ से चले जाओ ।

दामोदर : माँ, मैं नहीं जाऊँगा । नहीं जाऊँगा । (रो पड़ते है)

लक्ष्मी : बेटे, मत रोओ मुझे भूल जाओ । गोविन्द राव तुम्हारा बड़ा भाई है । इसके साथ जाओ ।

गोविन्द : (रोते हुए) रानी माँ ! आप अकेली हैं ।

लक्ष्मी : नहीं बेटे, मेरी तलवार मेरे साथ है । याद रखो, शत्रु मुझे कैद नहीं कर सकते और अब मैं अधिक समय तक जीवित भी नहीं रह सकती । मेरे बेटे, चले जाओ । दुश्मन की नजरों से दूर चले जाओ । मेरा कहा मानो ।

(दोनों रोते हुए रानी का चरण स्पर्श करते हैं । रानी अपने रक्त से दोनों को टीका करती है । फिर दोनों को स्नेह से स्पर्श करती हैं । दोनों रोते हुए चले जाते हैं । रानी उनकी ओ देखती रहती है ।)

Scanned with OKEN Scanner

लक्ष्मी : ऊपर अनन्त आकाश है। सामने हरी-भरी धरती है। समय कितना बदल गया! झाँसी! काल्पी! ग्वालियर! और आज यह सुनसान मैदान! सबकुछ खो दिया। लेकिन एक सन्तोष है। कहीं कोई भूल तो हुई नहीं। कौन?

(मेजर स्टूअर्ट का सैनिकों के साथ प्रवेश)

स्टूअर्ट : (अट्टहास करते हुए) हलो रानी साहबा, आप यहाँ? इस हाल में?

लक्ष्मी : तो तुमलोग आ गये। लगता है कि अन्तिम युद्ध बाकी था।

स्टूअर्ट : हम मेजर स्टूअर्ट। आपके डरबार में गया। आपको बोला-सरेन्डर करो, पीस करो, सुलह करो। आप रिफ्यूज किया। आज फिर बोलटा—सरेन्डर करो।

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, लक्ष्मीबाई के विचारों में आज भी परिवर्त्तन नहीं हुआ है। लक्ष्मीबाई मर मिटेगी, पर झुकेगी नहीं।

स्टूअर्ट : रानी, हमारा बाट मानना होगा। आपके लाइफ का बचाने का जिम्मा हम लेटा। हम आपको मारेगा नईं। अरेस्ट करना मांगटा।

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट, मैं आहत हो चुकी हूँ, लेकिन मेरे हाथ में यह नंगी तलवार है। आप चाहें तो युद्ध कर सकते हैं।

स्टूअर्ट : (अट्टहास) पुअर लेडी! हम जानटा, आप नईं मानेगा। आप जंग मांगटा? राइटो!

(दोनों की तलवारें टकराती हैं। युद्ध। स्टूअर्ट की तलवार गिर पड़ती है। वह झट से पिस्तौल निकाल कर गोली चला देते हैं। रानी गिर पड़ती हैं। सिपाही रानी को घेर लेते हैं।)

लक्ष्मी : मेजर स्टूअर्ट! आपने पिस्तौल का सहारा लिया। मुझे कैदी नहीं बना सके। झाँसी की रानी का खून बेकार नहीं जायेगा। इससे प्रेरणा पाकर हजारों-लाखों पुरुष और नारी हिन्दुस्तान को आजाद करने के लिए गोरी सरकार से युद्ध करेंगे। आज नहीं तो कल, भारत आजाद होकर रहेगा। जय भारत! जय भा-र-त! आह! (मृत्यु)

स्टूअर्ट : सोल्जर्स! जनरल सर ह्यूरोज को बोलो—झाँसी का रानी मारा गया।

(आवेश में ह्यूरोज का प्रवेश)

रोज : मेजर स्टूअर्ट, यू हैव शौट डाउन इन्डियन जौन आफ आर्क! शेम फौर यू!

स्टूअर्ट : सर, रानी हम पर अटैक किया। हमको डिफेन्स में गोली चलाना पड़ा।

रोज : मेजर स्टूअर्ट, आप हमारा आर्डर के माफिक काम नई किया। हम रानी को अरेस्ट करना मांगटा ठा। बट आई ऐम सौरी, आप मिस्टेक किया।

स्टूअर्ट : आई ऐम सौरी सर !

रोज : रानी वाज दि ब्रेवेस्ट ऐन्ड बेस्ट मिलिटरी लीडर आई हैव एवर सीन। हम आर्डर डेटा—हमारा सोलजर्स को रानी के सामने सलामी डेना होगा–आज–अभी !

(टोप उतार कर सलाम करते हैं। स्टूअर्ट तथा अन्य लोग भी फौज के मातमी ढंग से सलामी देते हैं। मातमी बाजे की ध्वनि।)

——: समाप्त :——

Scanned with OKEN Scanner